

चम्बल धरा Chambal Dhara



COLLEGE OF AGRICULTURE, UMMEDGANJ-KOTA
(Agriculture University, Kota)



कृषि महाविद्यालय

(कृषि विश्वविद्यालय, कोटा)

उम्मेदगंज, कोटा-324001 (राज.)

Ph. : 0744-2941655, E-mail : deancoa2018@gmail.com





कृषि महाविद्यालय, उम्मेदगंज-कोटा

(कृषि विश्वविद्यालय, कोटा)
(राजस्थान)-324001



डॉ. एस. के. जैन
अधिष्ठाता

प्रावकथन

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'चंबल-धरा' के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद, सह-पाठ्यक्रम तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का समुचित समावेश अत्यंत आवश्यक है। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के अनेक अनछुए आयाम विकसित एवं अभिव्यक्त होते हैं। पाठ्यक्रम के बढ़ते बोझ तथा परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने के दबाव के कारण प्रायः विद्यार्थियों की मौलिक लेखन प्रतिभा दबकर रह जाती है तथा उनके विचारों की अभिव्यक्ति सीमित हो जाती है। महाविद्यालय की यह पत्रिका उन्हें अपनी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त एवं प्रेरणादायक मंच प्रदान करती है।

वर्तमान परिवेश में केवल भौतिक उपलब्धियाँ ही जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं होनी चाहिए। जीवन का वास्तविक सुख एवं सच्ची प्रसन्नता एक सुसंस्कृत, परिष्कृत एवं आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण में निहित है। सच्ची शिक्षा मनुष्य में मानवता के मूल्यों का विकास करती है तथा उसे संवेदनशील, विवेकशील एवं संतुलित बनाती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय विद्यार्थियों को श्रेष्ठ नागरिक बनाने हेतु सतत प्रयासरत है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है, विद्यार्थियों के वैचारिक दरिद्रता का नाश हो, उनके मन एवं मस्तिष्क पर जमी कुरीतियों एवं संकीर्ण मान्यताओं की धूल हटे, तथा वे जीवन, समाज और राष्ट्र को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करने वाले विचारों को अपनाएँ। उनका चिंतन सही दिशा में विकसित हो तथा वे आत्मनिर्भर बनकर जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम हों।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका इन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगी। 'चंबल-धरा' के सफल प्रकाशन के अवसर पर मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों सहित महाविद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ. एस. के. जैन
अधिष्ठाता

सम्पादक समिति



Dr. S. K. Jain
Patron



Dr. Suneeta Pandey
Chief Editor



Dr. Manish Sharma
Editor



Dr. Hemraj Chhipa
Editor



Dr. Lokesh Kumar Meena
Editor

प्रधान संपादक की कलम से....



‘शब्दों में वह अमोघ शक्ति होती है, जो विचारों को दिशा और समाज को एक नई चेतना प्रदान करती है।’

इस विश्वास को आत्मसात करते हुए, मुझे हमारे महाविद्यालय की पत्रिका ‘चम्बल धरा’ का यह नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए असीम गौरव और प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। चम्बल धरा केवल पृष्ठों का एक समूह मात्र नहीं है, यह हमारे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्राध्यापकों की सृजनशीलता, गहन चिंतन और बौद्धिक उर्वरता का एक जीवंत दस्तावेज है। जिस प्रकार चम्बल नदी अपनी अविरल गति और साहस के लिए जानी जाती है, उसी प्रकार यह पत्रिका भी हमारे युवाओं की भावनाओं और उनके रचनात्मक प्रवाह को एक मंच प्रदान करती है।

आज के इस तीव्र गति से बदलते और तकनीक-प्रधान युग में, जहाँ आधुनिकता हमारी जीवन शैली का अभिन्न अंग बन चुकी है, अपनी जड़ों से जुड़े रहना और अपनी संस्कृति, संस्कारों व मौलिक विचारों को सहेजना एक बड़ी चुनौती भी है और आवश्यकता भी। मुझे यह कहते हुए गर्व है कि चम्बल धरा परंपरा और आधुनिकता के इसी सेतु को सफलतापूर्वक निर्मित कर रही है। यह अंक न केवल साहित्यिक अभिरुचि को परिष्कृत करेगा, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में भी उत्प्रेरक की भूमिका निभाएगा।

इस अंक को मूर्त रूप देने के लिए मैं उन सभी रचनाकारों को हृदय से बधाई देती हूँ, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट लेखनी से इसे समृद्ध बनाया है। साथ ही, संपादकीय मंडल के प्रत्येक सदस्य के समर्पण और अथक परिश्रम की मैं सराहना करती हूँ, जिनके सहयोग के बिना इस संकल्प को सिद्ध करना असंभव था।

अंत में, मेरी यही कामना है कि चम्बल धरा ज्ञान, सृजन और प्रेरणा के एक ऐसे स्रोत के रूप में प्रवाहित होती रहे, जो हमारे विश्वविद्यालय की गरिमा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाए।

(प्रधान सम्पादक)
(डॉ. सुनीता पांडेय)

अनुक्रमणिका



क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	कृषि महाविद्यालय : एक दृष्टि		01
2.	बेबस किसान	राशिद अली	02
3.	ज्ञान से समृद्धि की ओर	डॉ. कमल चंद मीणा	02
4.	सड़कें	डॉ. प्रवीण कुमार चचैया	03
5.	नारी-कृषि की शक्ति	डॉ. नीतू मेहता	03
6.	"माटी री महक " (हाड़ौती अंचल री आत्मा)	डॉ. लोकेश कुमार मीणा	04
7.	"हाड़ौती री रंगत"	डॉ. लोकेश कुमार मीणा	04
8.	मिट्टी से भविष्य तक	डॉ. जुगल किशोर बाना	04
9.	बीज से सुरक्षा तक : पौध रोग विज्ञान की यात्रा	डॉ. दमा राम	05
10.	भारत माँ और माटी	वैशाली नागर	05
11.	डिजिटल कंकाल	राशिद अली	06
12.	कृषि : जीवन की आत्मा	डॉ. रामकिशन मीणा	06
13.	माटी का मान	डॉ. रामकिशन मीणा	06
14.	जड़ों में छुपा आसमान	जयवीर	07
15.	निष्ठा से शिखर तक	डॉ. सुनीता पांडेय	07
16.	शिक्षक : संस्कार और विज्ञान के वाहक	डॉ. हेमराज छीपा	08
17.	मिट्टी की आत्मा : भारत के हरे रक्षक	हितेश गेनण	08
18.	किसान	बेबी कुमारी	09
19.	पुनर्जीवन : रसायन से जैविक की ओर	सीमा प्रजापत	09
20.	संघर्ष से सफलता तक	चिंटू पंकज	09
21.	आधुनिक भारत में कृषि छात्रों का योगदान	डॉ. अरविन्द नागर	10
22.	उड़ान अभी बाकी है	गुलिस्ता बानो	10
23.	अपनी उड़ान	कुमकुम सेन	10
24.	महाविद्यालय की लेखा शाखा और कृषि विज्ञान	कमल सुमन	11
25.	विद्यार्थी जीवन का संघर्ष	मुकेश पंकज	11
26.	बेरोजगार और उसका कमरा	निरंजन दवे	11
27.	भारत का अजय योद्धा "महाराणा प्रताप"	डॉ. राकेश कुमार यादव	12
28.	वह पौधा जो हार मानने को तैयार नहीं था	डॉ. एस. के. जैन	13
29.	गलती	डॉ. प्रवीण कुमार चचैया	13-14
30.	मैदान से मिली सीख	डॉ. मनीष शर्मा	14
31.	विज्ञान और परंपरा: कृषि का नवयुग	मनीष यादव	15
32.	आधुनिक जीवन में सब्जियों का महत्व और संतुलित आहार	आदर्श कुमार टाटू	15-16
33.	I went out for a little stroll today	Jyotishman	17
34.	A call back to the soil	Samridhi	17
35.	Precision in the Field	Nisha Nagar	18
36.	The Organic Way	Monti Nagar	18
37.	Discipline	Sahil Moond	18
38.	The Art of Repotting	Avani Jain	19
39.	Use of Biocontrol Agent in Agriculture	Gaurav Mangal	19
40.	Insect wants to talk to human	Dr. Kishor Pujar	20
41.	Makerspace: An Innovation in Library & Information Services	Dr. Shashi Rai	21
42.	राष्ट्रीय सेवा योजना	डॉ. लोकेश कुमार मीणा	22
43.	Milestone of College of Agriculture, Kota		23-24
44.	Our Staff Members		25-29

कृषि महाविद्यालय : एक दृष्टि

कृषि महाविद्यालय, उम्मेदगंज, कोटा की स्थापना 27 अप्रैल, 2018 में राजस्थान सरकार के बजट घोषणा के पत्र संख्या राजस्थान सरकार कृषि (ग्रुप-3) विभाग प. 4 (26) कृषि-3/2018 जयपुर, दिनांक 10.04.2018 द्वारा कृषि विश्वविद्यालय, कोटा के संघटक महाविद्यालय के रूप में की गई है। यह इस कृषि विश्वविद्यालय, कोटा का दूसरा संघटक महाविद्यालय है, जो शिक्षा नगरी के नाम से विख्यात कोटा शहर में स्थित है। वर्तमान में इस महाविद्यालय में 12 विभागों के साथ कृषि स्नातक 65 विद्यार्थियों, स्नात्कोत्तर (शस्य विज्ञान-06, पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी-06, कृषि प्रसार शिक्षा-04 मृदा विज्ञान-04 एवं पौध व्याधि-04 विद्यार्थियों) एवं विद्या वाचस्पति (शस्य विज्ञान-04, पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी-03) के लिये पाठ्यक्रम संचालित है। विद्यार्थियों के प्रायोगिक कार्यों हेतु प्रयोगशालाओं में विभिन्न प्रकार के उपकरण उपलब्ध करवाए गए हैं और आधुनिक उपकरणों के उपायन के प्रयास जारी हैं। अनुसंधान कार्यों हेतु लगभग 30 हैक्टेयर में निर्देशात्मक फार्म का विकास कार्य प्रगति पर है। यह महाविद्यालय कोटा, कैथून मुख्य मार्ग पर धाकड़खेड़ी गांव के समीप कोटा मुख्य रेलवे स्टेशन से लगभग 15 किमी की दूरी पर तथा बस स्टैण्ड से लगभग 10 किमी की दूरी पर स्थित है।

महाविद्यालय की स्थापना के मुख्य उद्देश्य- यह महाविद्यालय कृषि विज्ञान में कृषि संसाधन, कृषि अनुसंधान और विकास, स्वरोजगार और सेवा उद्योग के लिए कृषि के वर्तमान परिदृश्य में अनुकूल मानव संसाधन विकसित करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। महाविद्यालय से प्रशिक्षित पेशेवर इस तरह के उच्च संभावित क्षेत्र में कृषि क्षेत्र के विकास को बेहतर बनाने में मदद करेंगे। महाविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए विभाग वार उपलब्ध सीट मैट्रिक्स निम्नलिखित है।

	UG Agriculture	M.Sc. Agronomy	M.Sc. Genetics and Plant Breeding	M.Sc. Soil Science	M.Sc. Plant Pathology	PG Agri. Ext. Education	Ph.D. Agronomy	Ph.D. Genetics and Plant Breeding
Intake Capacity (2024-25)	65	6	6	4	4	4	4	3
No. of passed out students (2024-25)	56	4	6	4	4	4	1	2



बेबस किसान



—राशिद अली
(लाईब्रेरी असिस्टेंट)

वो हमारे देश का प्राण है,
पर ये क्या, न उस पर किसी का ध्यान है।
तपती धूप में जो खून जलाता है,
सबका पेट भर, खुद भूखा सो जाता है।
मिट्टी से सोना उगाने वाला हाथ,
ढूँढ रहा है आज अपनों का ही साथ।
कर्ज की लहरों में, डूबी उसकी नाव है,
शहर की चकाचौंध में, गुम उसका गाँव है।
आसमां की ओर ताकती पथराई आँखें,
सूखे खेत और मुरझाई हुई शाखें।



कहने को तो वो अन्नदाता है महान
पर हकीकत में, क्या उसकी है कोई पहचान?
फटी बिवाइयां पैरों में, और माथे पर शिकन है,
मिट्टी में मिला उसका, पसीने से भीगा तन है।
खेतों की दरारों में, अपनी किस्मत को ढूँढता है,
वो बेबस होकर अब, बस कुदरत को पूजता है।
किस्तों में बँधी जिंदगी, और साहूकार का घेरा है,
उम्मीद की किरन धुंधली, चारों ओर अंधेरा है।
जागो ओ दुनिया वालो, अब तो गहरी नींद से,
मत खेलो उसके हक और उसकी उम्मीद से।
सिर्फ शब्दों में नहीं, सम्मान में उसे स्थान दो,
जो सबको जीवन देता है, उसे भी जीने का वरदान दो।

धरती माँ की गोद में, हरियाली का श्रृंगार,
ज्ञान की ज्योति से ही, होता खेतों का उद्धार।

कृषि प्रसार शिक्षा, देती नई पहचान,
किसानों के जीवन में, भरती खुशियों की मुस्कान।

नई तकनीक, नई विधि, जब गाँव—गाँव पहुँचती है,
सूखी मिट्टी भी तब, सोना उगलने लगती है।

बीजों का चयन सही, जल का हो समुचित प्रयोग,
प्रसार शिक्षा सिखाती, हर मुश्किल का संयोग।



ज्ञान से समृद्धि की ओर

रोगों से फसलों की रक्षा, उर्वरक का संतुलन,
हर किसान बने वैज्ञानिक, यही है इसका चिंतन।

सशक्त किसान बने जब, देश भी आगे बढ़ता है,
अन्नदाता की प्रगति से, हर घर खुशहाल रहता है।

ज्ञान का यह सेतु बने, गाँव और विज्ञान के बीच,
कृषि प्रसार शिक्षा से ही, सफलता आएगी खींच।

आओ मिलकर करें प्रयास, ज्ञान का दीप जलाएँ,
कृषि प्रसार शिक्षा से, भारत को समृद्ध बनाएँ।



—डॉ. कमल चंद मीणा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
प्रसार शिक्षा विभाग



सड़के



कच्ची सड़कें पक्की सड़कें, यहाँ वहाँ जाती हैं सड़कें ।
 राह दिखा मंजिल तक, हर एक को पहुँचाती सड़कें ।
 आते जाते लोगों के, पाँवों की धूल उड़ाती सड़कें ।
 हर राहगीर के मन को, सुख सुकून पहुँचाती सड़कें ।
 जीवन के हर मोड़ पर, राह बनाती जाती सड़कें ।
 भूले भटकें जैसे भी हों, मंजिल तक पहुँचाती सड़कें ।
 कच्ची सड़कें पक्की सड़कें, यहाँ वहाँ जाती हैं सड़कें ।
 आते जाते हर किसी से, अपना साथ निभाती सड़कें ।
 जन्म से मृत्यु तक हर एक के, जीवन का साथ निभाती सड़कें ।
 पेड़ों के कट जाने से, धूप के कहर से घबराती सड़कें ।
 भूत, भविष्य, वर्तमान को भी दर्शाती हैं सड़कें ।
 कच्ची सड़कें पक्की सड़कें, यहाँ वहाँ जाती हैं सड़कें ।
 राह दिखा मंजिल तक, हर एक को पहुँचाती सड़कें ।



डॉ. प्रवीण कुमार चवैया
 (तकनीकी सहायक)



—डॉ. नीतू मेहता
 सहायक आचार्य
 (कृषि सांख्यिकी)

नारी- कृषि की शक्ति

नारी है धरती, नारी है बीज, उससे ही उपजता जीवन का नीज ।
 मेहनत की धारा, साहस का संग, नारी है शक्ति नारी है रंग ।
 खेतों की मेड़ पर, सूरज की छाँव, उसकी लगन से खिलते हैं गाँव ।
 कभी हल थामे, कभी कलम उठाए,
 ज्ञान और श्रम से भविष्य सजाए ।
 कभी किसान, कभी वैज्ञानिक रूप,
 नारी शक्तिके है अनगिनत स्वरूप ।
 अनुप्रास की गूँज “मेहनत और ममता”, नारी है प्रेरणा, नारी है समता ।
 डिजिटल इंडिया की धड़कन वही, कृषि में प्रगति की पहचान वही ।
 मेहनत की माला, साहस का हार, नारी है उजियारा, नारी है आधार ।
 कृषि की प्रयोगशाला में दीप जलाए, भारत की प्रगति में रंग सजाए ।
 नारी है उजियारा, नारी है सहारा, कृषि और समाज में नारी है सितारा ।



“माटी री महक” (हाड़ौती अंचल री आत्मा)

हाड़ौती री धरती बोलै,
माटी में महक घणी,
हल जोतै किसान घाम में,
पसीनो झरै ज्यूँ मणी।

चंबल री धार सुगंध लावै,
जीवन रो सांचो सार,
बीजां में आस जगावै,
हरियातो होवै आँगण सार।

कद-कद मेह बरसै घणो,
कद-कद सूखो पड़ जावै,
तब भी किसान हिम्मत राखै,
मेहनत रो दीप जलावै।

मक्का, सोयाबीन, उड़द-बाजरो,
खेतां में लहराय,
धरती माँ री ओट में,
हर सपनो हरियातो छाये।

नवां जमाणो, नवीं रीती,
खेती में रंग भरै,
पर माटी सूं नातो पूराणो,
मन सूं कदे न उतरै।

“अन्नदाता रो मान, देश रो सम्मान।”

“हाड़ौती री रंगत”

माटी री खुशबू में बस्यो,
हाड़ौती रो सांचो मान,
चंबल री लहरां गावे,
धरती रो गौरव गान।
कोटा-बूंदी री गलियां में,
इतिहास बोलै हर बार,
गढ़-गढ़ में वीरता झलके,
राणां रो अमर सत्कार।
घाघरू-ओढ़णी रंग-बिरंगी,
संस्ति री पहचान,
गीत-भजन अर लोकनृत्य,
जीवन रो मधुर गान।
दाल-बाटी री खुशबू फैली,
साथे चूरमा रो स्वाद,
मेहमान आवे घर-आँगण में,
मिले प्यार अपार।
तीज-त्यौहार री रौनक देखो,
हर घर में उत्सव छाये,
मिलजुल कर सब हंसता-गाता,
भाईचारा अपनाय।
सरल हृदय अर सच्ची बोली,
यां रो सबसे बड़ो मान,
हाड़ौती री माटी में बस्यो,
भारत रो असली पहचान।



डॉ. लोकेश कुमार मीणा
सहायक आचार्य (कृषि अर्थशास्त्र)



मिट्टी से भविष्य तक

गाँव की पगडंडी से उठती एक नई पुकार,
मिट्टी की खुशबू में बसता उज्ज्वल सा संसार।
नन्हे-नन्हे हाथों में सपनों की मशाल,
ग्राम्य छात्र लिख रहे भविष्य का नया कमाल।
किताबों के संग खेतों का भी ज्ञान,
परंपरा से जुड़कर विज्ञान का सम्मान।
बीजों में नवाचार, सोच में विस्तार,
हरियाली से सजेगा कल का हर द्वार।

सूरज की किरणों संग ऊर्जा का विचार,
सौर पैनल से जगमग होगा अब हर परिवार।
जल की हर बूंद का होगा अब सम्मान,
सूक्ष्म सिंचाई से बढ़ेगा खेतों का मान।

डिजिटल ज्ञान से जुड़ता हर किसान,
मोबाइल में सिमटा अब पूरा आसमान।
मंडी के भाव हों या मौसम की पहचान,
तकनीक से मजबूत होगा गाँव का इंसान।

जैविक खेती का फिर जागेगा विश्वास,
धरती माँ को मिलेगा फिर से नव श्वास।
रसायनों से दूर, प्रकृति के संग ताल,
स्वस्थ फसलें देंगी जीवन में खुशहाल।

सपनों में बसता है आत्मनिर्भर गाँव,
हर हाथ में हुनर, हर मन में नव-भाव।
शिक्षा और श्रम से बनेगा सशक्त समाज,
ग्राम्य विकास बनेगा भारत का ताज।
नारी शक्ति भी अब कदम से कदम मिलाए,
कृषि और उद्यम में अपनी पहचान बनाए।
समानता की राह पर बढ़ता हर परिवार,
गाँव बनेगा प्रगति का सच्चा आधार।
ये छात्र नहीं, भविष्य के निर्माता हैं,
धरती के सच्चे सेवक, परिवर्तन के दूत हैं।
उनकी दृष्टि में छुपा है विकास का सार,
गाँव से ही चमकेगा भारत का उद्गार।
चलो मिलकर संकल्प लें, बढ़ाएँ ये अभियान,
गाँव-गाँव में गूँजे प्रगति का गान।
दृष्टिकोण उनका बने राष्ट्र की पहचान,
ग्राम्य विकास से ही होगा भारत महान।

—डॉ. जुगल किशोर बाना
सह आचार्य (कीट विज्ञान)



बीज से सुरक्षा तक : पौध रोग विज्ञान की यात्रा

धरती की गोद में छियाली का अपना,
बीजों में छुपा होता जीवन अपना।
पत्र नोगों की छाया जब फैलने लगती,
फन्सलों की मुन्कान भी मुन्झाने लगती।
तभी बनकन प्रवृत्ति, ज्ञान का उजियाना,
पौध रोग विज्ञान आता नखना।
न्यूकम जीवों की चाल नमझाना,
रोगों का नखन्य धीने-धीने बतलाता।
कभी फफूंद, कभी जीवाणु का आक्रमण,
कभी विषाणु कनता मौन उत्पीड़न।
पत्तियों पत्र धब्बे, जड़ों में नडन,
उन रोग में छिया होता एक कानन।



रोग की पहचान, निदान का मार्ग,
वैज्ञानिक सौच से कनता है सुधान।
बीज उपचान से लेकर फन्सल नुनक्षा तक,
उन कदम पत्र देता है नटीक पथ।
किन्सानों के नंग यठ न्नाथी बनता,
उन नंकट में नमाधान गदता।
कम खनि, अधिक उपज का नदेश,
नतत कृषि का नचता पन्वेश।
पौध रोग विज्ञान केवल उपचान नहीं,
यठ भविष्य की नुनक्षा का विचान नखी।
छियाली की नक्षा, अनन का नम्मान,
इन्नी में बनता है कृषि का प्राण।



डॉ. दमा राम
सह आचार्य (पौध रोग विज्ञान)

हम हिन्दुस्तानियों का अंदाज, दुसरों से थोड़ा अलग है।
और सिर्फ अंदाज ही क्यों, हमारा तो पता भी सबसे अलग है।
दुनिया कहाँ रहती है, आसमान के तले,
और हम हिन्दुस्तानी भारत माँ के आँचल तले
अम्बर तले जग रहें, हम तेरे आँचल तले रहते है,
दुनिया में हम ही अकेले है, जो माटी को माँ कहते हैं।
लोग फौज में नौकरी करते है, तो फौजी कहलाते हैं,
हम, बिना वर्दी पहने खुद को भारत का सिपाही बुलाते हैं।
और जितनी बार आंखो से तिरंगा गुजरें, आदर से सर झुकाते हैं।
एक अजीब-सा सपना रोज हमारी आंखो को सताये,
कि जान तो एक दिन जानी ही है,
अगर देश के लिए जाये, तो मजा आ जाये।
ऐसे हैरान हो के मत देखिए, ये कहाँ लिखा है,
कि एक आम हिन्दुतानी, तिरंगे की सौगंध नहीं ले सकता,
कहाँ लिखा है, कि जिसने वर्दी नहीं पहनी,
वो देश के लिए जान नहीं दे सकता।
जिस्मों पे वर्दी, न काँधो पर सितारे, न झंडे झुकेंगे, जिक्र पे हमारे,
पर जां निसारी की जब बात होगी, आगे मिलेंगे कतारों में हम,
तो क्या जमीं पर रहे ना रहे, मुस्कुरायेंगे तारों में हम।
वो बाग हंसता रहें, हम जिसे हिन्दुस्तां कहते हैं।
दुनिया में हम ही अकेले है, जो माटी को माँ कहते हैं।

भारत माँ और माटी



वैशाली नागर
(प्रयोगशाला सहायक)

डिजिटल कंकाल

बंदर ने अपना यूट्यूब चैनल खोला है,
पेड़ पे बैठा कैमरा लेकर सबको बोला है।
लाइक करो, शेयर करो, जल्दी सब्सक्राइब करो,
अगर बनना है 'इन्फ्लुएंसर', तो शर्म-हया का त्याग करो!
"इज्जत जाए तो जाए, पर रील नहीं रुकनी चाहिए,
कंटेंट के लिए चाहे, गर्दन भी झुकनी चाहिए।"
बुजुर्ग देख रहे हैं टकटकी लगाके,
बच्चे नाच रहे हैं तुमके लगाके।
पढ़ाई-लिखाई गई अब तेल लेने,
सब व्यस्त हैं 'ट्रेंडिंग ऑडियो' लेने।
जंगल हो या शहर, सब एक ही चाल हैं,
इंसान कम, अब सब 'डिजिटल कंकाल' हैं।
बन्दर ने तो खैर फिर भी चैनल खोला है,
इंसान ने तो रील के पीछे अपना वजूद ही रोला है!
सड़क किनारे गड्ढा हो, तो लोग हाथ नहीं बढ़ाते,
पहले एंगल सेट करते हैं, फिर 'हेल्पिंग हैंड' दिखाते।



—राशिद अली
(लाईब्रेरी असिस्टेंट)

व्यूज की खातिर लोग अब खुद का मज़ाक बनाते हैं,
बन्दर क्या नकल करेंगे, अब तो इंसान ही नाच दिखाते हैं।
इज्जत की फिक्र छोड़ी, बस 'शेयर' की आस है,
सच कहूँ तो ये तरक्की नहीं, बुद्धि का विनाश है।
चौराहों पर तुमके हैं, श्मशानों में 'ब्लॉग' है,
ये टैलेंट नहीं साहिब, ये एक मानसिक रोग है।
नब्ज अब भी चलती है, पर अहसास मर चुके हैं,
हम अपनी ही आँखों में, खुद को शर्मिदा कर चुके हैं।
खामोश खड़ा वो बंदर, अब हम पर मुस्कुराता है,
वो जानवर होकर भी, हमें 'इंसानियत' सिखाता है।
कैमरे के पीछे छिपे, खोखले से ये चेहरे हैं,
दिखावे की इस धूप में, अंधेरे बहुत गहरे हैं।
बंदर तो बस एक जरिया था, आईना दिखाने का,
कि सिलसिला शुरू हुआ है, इंसानियत मिटाने का।

कृषि : जीवन की आत्मा

दरती बोले - "मेरा गान,
मेरे सीने पर चलता किसान।"
पसीने की ह्र बुँद में प्यार,
यहीं बसता भारत-संसार।



वो जोतता, बोता, सींचता धान,
वो ही है देश का सम्मान।
बिना किसान न रोटी, न शान,
वो ही भारत, वो ही प्राण।

और खेतों से उठती नई आशा,
ज्ञान की रोशनी, कृषि वैज्ञानिक की भाषा।
वो सीख रहे मिट्टी का मर्म,
विज्ञान संग निभा रहे धर्म।

उनसे ही जागे ह्र खेत, ह्र गाँव,
उनसे ही बनेगा भारत महान।
कृषि, किसान और युवा के संग,
विश्व में गूँजे भारत का रंग।

डॉ. रामकिशन मीणा
सह-आचार्य (शस्य विज्ञान विभाग)

माटी का मान

कण-कण में जिसके जीवन है, वह माटी नहीं, वह चंदन है,
किसान के श्रम की गाथा का, यह खेत ही पावन आँगन है।
सिर्फ पसीने से फसलें अब, लहलहा नहीं पाएंगी,
जब बुद्धि और तकनीक मिलेगी, तभी खुशहाली आएगी।

जाँचो मिट्टी की नब्ज को, इसमें क्या कमी, क्या सार है,
उर्वरक उतना ही डालो, जितना भूमि को दरकार है।
नाइट्रोजन, पोटाश, फास्फोरस का जब होगा सही संतुलन,
तभी धरा देगी सोना, और मिटेगा सबका कुपोषण।

बूँद-बूँद सिंचाई से, हम जल का मान बढ़ाएंगे,
"पर ड्रॉप" मोर क्रॉप" के सपने को, सच कर दिखलाएंगे।
सूक्ष्म जीव जो मित्र हैं हमारे, उनका करना है संरक्षण,
जैविक और रसायन का, अब करना होगा सही सम्मिश्रण।

लैब की रिसर्च जब खेतों तक, सीधी पहुँचेगी शान से,
जुड़ेगा जब विज्ञान का अनुभव, किसान के आत्मसम्मान से।
तब अन्नदाता न डरेगा सूखे से, न बाढ़ का उसे भय होगा,
मिट्टी जब होगी सेहतमंद, तभी भारत का उदय होगा।

जड़ों में छुपा आसमान

मिट्टी की गोद में चुपचाप पड़ा बीज,
ना कोई शोर, ना कोई ताज, ना कोई तमीज ।
ऊपर से अंधेरा, चारों ओर दबाव,
फिर भी उसके भीतर था उनालों का बहाव ।

हवा ने कहा - “रुक जा, यहाँ कुछ नहीं है,”
बारिश बोली - “तू अभी पूरा नहीं है।”
पर बीज मुस्कुराया, चुपचाप सहता रहा,
अपने ही अंदर एक सूरज गढ़ता रहा ।

धीरे-धीरे उसने जमीन को चीर दिया,
कमजोरी के हर उर को धीरे दिया ।
एक नन्ही सी कोपल, जब बाहर आई,
धरती ने भी उसकी हिम्मत सर झुकाई ।

पेड़ बना तो छाँव भी खुद चलकर आई,
थकी हुई राहों ने राहत पाई ।
जिसे दबाया था कभी इस जमाने ने,
वही आसमान छू गया अपने बहाने से ।
तू भी अगर आज अंधेरों में धिरा है,
समझ ले कि तेरे भीतर भी सब कुछ भरा है ।
जड़े जितनी गहरी, उतनी ऊँची उड़ान,
हर बीज के अंदर छुपा है एक आसमान ।



जयवीर
स्नातकोत्तर (कृषि)
पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी



निष्ठा से शिखर तक

जीवन का सबसे सच्चा ज्ञान,
ईमानदारी में छिपा सम्मान ।
सच की राह जो अपनाता है,
वही असली मुकाम पाता है ।

निष्ठा जिसकी हर सांस में हो,
मेहनत जिसकी हर आस में हो,
वही गढ़ता है अपनी तकदीर,
बन जाता है वो सच्चा वीर ।

लक्ष्य रहे जब आँखों के सामने,
रुकें न कदम किसी भी बहाने,
जो अडिग रहे हर एक परीक्षा में,
विजय उसी की हर अभिलाषा में ।

ईमान और समर्पण की ज्योति,
कर दे जीवन पथ आलोकित,
जो खुद पर विश्वास रखे सदा,
सफलता झुके उसके चरणों में नित ।



डॉ. सुनीता पांडेय
आचार्य (पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी)



शिक्षक : संस्कार और विज्ञान के वाहक

गुरु की दृष्टि में बसता है कल का भारत महान,
हर छात्र में दिखता उन्हें उज्ज्वल भविष्य का विधान।
चश्मक की धूल में छुपे सपनों के विस्तार,
शिक्षक गढ़ते हैं चुपचाप बदलते समय का आकार।

वे केवल पढ़ाते नहीं, जीवन का अर्थ बताते हैं,
अज्ञान के अंधकार में ज्ञान का दीप जलाते हैं।

हर प्रश्न के पीछे छुपा जिज्ञासा का संसार,
गुरु उसे दिशा देकर करते उजाला अपार।

कितनी रातें जागकर योजनाएँ बनाते हैं,

हर बच्चे के मन तक पहुँचने के रास्ते अपनाते हैं।

कभी सख्त बन, कभी स्नेह का सागर बन जाते हैं,

अपने सपनों से पहले छात्रों के सपने सजाते हैं।

उनकी सोच में बसता है नवाचार का बीज,
हर विद्यार्थी बने सक्षम, यही है उनका सलीका अजीब।

केवल अंकों से नहीं, व्यक्तित्व से करते निर्माण,
संस्कार, विज्ञान और विवेक का देते अनुपम दान।

वे सिखाते हैं—सोचना, समझना, आगे बढ़ना,
गिरकर फिर उठना और लक्ष्य तक चढ़ना।

हर असफलता में खोजो एक नई राह,

यही बनाता है जीवन को सशक्त और अथाह।

डिजिटल युग में भी वे मूल्य नहीं भूलते,
संस्ति और आधुनिकता के संग-संग फूलते।

भारत की आत्मा को ज्ञान से जोड़ते हैं,

हर कक्षा में राष्ट्र निर्माण के बीज बोते हैं।

एक शिक्षक के मन में कितनी भावनाएँ होती हैं,

हर सफलता पर आँखें नम और मुस्कानें होती हैं।

जब शिष्य आगे बढ़कर इतिहास रचता है,

तब गुरु का हर त्याग सफल सच होता है।

वे जानते हैं— उनका श्रम, कभी व्यर्थ नहीं जाएगा,
हर छात्र एक दिन देश का दीपक बन जगमगाएगा।

उनकी तपस्या से ही राष्ट्र का होता निर्माण,

गुरु ही हैं भारत के सच्चे भविष्य के प्राण।

आओ नमन करें उन महान आत्माओं को आज,

जिनसे रोशन है हर दिशा, हर कक्षा, हर समाज।

उनकी दूर दृष्टि से ही सशक्त होगा देश,

शिक्षक ही हैं भारत के उज्ज्वल भविष्य का विशेष।



डॉ. हेमराज छीपा
सहायक आचार्य
(सूक्ष्मजीव विज्ञान)



मिट्टी की आत्मा : भारत के हरे रक्षक



सुनहरी धूप, घटाओं की छाँव,
जहाँ धरती माँ लेती ठाँव,
वहीं से उठता देश का स्वर,
कृषि है जीवन, कृषि ही धरा।
हल की रेखा, आशा की लकीर,
किसान गढ़े अपनी तकदीर।
पसीने की हर एक बुँद में जान,
बसता है भारत, बसता किसान।
वो अन्नदाता, वो धरती का वीर,
भूख से लड़ता, सच्चा अधीर।
बिना उसके जग सूना, खाली,
उसके श्रम से फूली थाली।
और देखो : खेतों की ओर,
ज्ञान के दीपक, नई भोरा।
कृषि छात्र, नई सोच के साथ,
संवारे धरती, विज्ञान के हाथ।
बीजों में सपने, शोध में रस,
हर प्रयोग में उगे विश्वास।
वो हैं भविष्य के कृषिशायरी,
धरती के सच्चे वास्तुकार हैं ये।
प्रयोगशाला से खेतों तक,
उनका ज्ञान बने भारत का लक।
हर अंकुर में नव जीवन जागे,
हर फसल में राष्ट्र के रागे।
हे भारत! तेरी धड़कन यही,
धान की बाली, गेहूँ की गंध यही।
किसान और छात्र : तेरे मान,
रचते हैं जग का कल्याण।
दुनिया जाने, हर युग में सत्य,
कृषि ही जीवन, कृषि ही शक्ति।
जो मिट्टी से प्रेम निभाते हैं,
वे ही मानवता को बचाते हैं।

हितेश गेनण
विद्यावाचस्पती (शस्य विज्ञान)

किंरान



धूप में जलता, बारिश में भीगता,
मिट्टी से नाता कभी न टूटता।
अपने पसीने से सोना उगाए,
तभी हर घर में चूल्हा जल पाए।

खाली पेट भी मुस्कान रखता,
दूसरों की भूख पहले समझता।
धरती माँ का सच्चा बेटा,
मेहनत में ही उसका गहना।

अन्नदाता को मान दो, सम्मान दो,
उसके सपनों को भी पहचान दो।
जब तक खेतों में हरियाली है,
तब तक देश की खुशहाली है।



बेबी कुमारी
स्नातकोत्तर (कृषि) (शस्य विज्ञान)

पुनर्जीवन : रसायन से जैविक की ओर



बहुत सहा रसायनों का जहर, अब तो इसे विराम दो,
मिट्टी को उसकी शक्ति लौटाओ, जैविक का वरदान दो।
सिर्फ उपज की अंधी दौड़ में, हमने घर उजाड़ा है,
मृदा के सूक्ष्म संसार को, रसायनों से पछाड़ा है।

गोबर, नीम और कंपोस्ट से, फिर से माँ को सजना है,
कीटनाशकों के चक्रव्यूह से, अब हम सबको बचना है।
जीवामृत जब मिट्टी की, रग-रग में दौड़ने जाएगा,
केंचुआ बनकर मित्र हमारा, फिर से वापस आएगा।

जैविक खेती मात्र नहीं विधि, यह धरती का सम्मान है,
शुद्ध अन्न और स्वस्थ जीवन, यही नया अभियान है।
आओ लौटें प्रकृति की ओर, एक नया संकल्प करें,
मिट्टी की खोई खुशबू को, हम फिर से जीवंत करें।

सीमा प्रजापत
विद्यावाचस्पती (शस्य विज्ञान)

जीवन एक संघर्ष है।
परिश्रम जिसका निष्कर्ष है।।

सुख - दुःख तो आते रहते हैं।

जो जीत जाए इनसे वह ही विजय मनुज है।।

खुद ही खुद का निर्माण करो,

खुद ही खुद का विश्वास करो,

चलो उठो अब तो अपने भविष्य का निर्माण करो।।

संघर्ष से सफलता तक

जीवन बड़ा अनमोल है,

इसका कुछ सदुपयोग करो।

छोड़ जाओ एक झमर छाप,

कि जीवनभर फिर तुम याद रहो।

जीवन एक संघर्ष है।

परिश्रम जिसका निष्कर्ष है।।



चिंदू पंकज
स्नातकोत्तर (कृषि) (पौध रोग विज्ञान)

आधुनिक भारत में कृषि छात्रों का योगदान

धरती की गोद में सपनों के बीज,
ज्ञान से सींचें, मेहनत के तीज।
नव युग के ये नवयुवक ज्ञानी,
कृषि छात्र हैं भारत की कहानी।



हल और तकनीक का संगम लिए,
मिट्टी की भाषा को समझे जिए,
ड्रोन से खेतों का हाल बताएं,
एप्स से मौसम की खबरें लाएं।

परंपरा संग विज्ञान का मेल,
बंजर में भी हरियाली का खेल,
जल, जमीन का संतुलन साधें,
हर किसान के जीवन को बांधें।

जलवायु के बदलते रंग में,
नव उपाय खोजें हर ढंग में,
बीजों के रक्षक, भविष्य के ध्वज,
हर फसल में लिखें देश का सृज।

सिर्फ अन्न ही नहीं उपजाते,
सतत विकास के पथ दिखलाते,
स्वच्छ हवा और जल का संदेश,
उनसे ही सजे भारत विशेष।

आधुनिक भारत की ये पहचान,
कृषि छात्र हैं देश की शान,
मिट्टी से जुड़े, आकाश छुएं,
नई दिशा में भारत को ले जाएं।

डॉ. अरविन्द नागर
सहायक प्रध्यापक (उद्यानिकी)



उड़ान अभी बाकी है



तू निकल आ बाहर अपने कल से अग्नी तेरी उड़ान बाकी है,
बजाय पछताने के सीख ले तू अपने कल से कि तेरी उड़ान बाकी है,
कल जो हो गया उसे जाने हैं तू आज पर अपनी जान लगा दे,
तू उमंग ,उम्मीद है किसी की मत बैठ निराशा में तेरी उड़ान बाकी है,
तुझे खरा उतरना है उस उम्मीदों पर, पूरे करने हैं अधूरे ख्वाबों को,
तोड़ना हैं उन जंजीरों को।

उठ जा, अपनी हिम्मत फिर से जगा तेरी उड़ान बाकी है
आयेंगे आधी तूफान बाधाएु बनकर, बस तू शिद्धत से डटा रहना अग्नी
तेरी उड़ान बाकी है.....

गुलिस्ता बानो
स्नातकोत्तर (कृषि) (पौध व्याधि)

अपनी उड़ान

कागज की कश्ती, सपनों का संसार,
हौसलों की पतवार, मंजिल का नगर।
गिरना भी सीखा, उड़ ना भी सीखा,
हर मोड़ पर खुद को नया लिखना भी सीखा।



ना रास्ता ढूँढा, ना राहें तलाशा,
अपने पैरों में ही रख ली आशा।
जो कल तक लगता था मुश्किल बहुत,
आज वही कहता है, “तू कर सकती है सब”।

तो चल, रुकना नहीं, अभी दौड़ बाकी,
सूरज से भी आगे एक सुबह बाकी ,
दुनिया कहे जो कहे , तू बस सुन अपना दिल,
तेरी कोशिश ही है सबसे प्यारी गजल।



कुमकुम सेन
स्नातकोत्तर (कृषि) (पौध व्याधि)

“महाविद्यालय की लेखा शाखा और कृषि विज्ञान”

उम्मेदगंज की धरती पर, सपनों का विस्तार,
कृषि महाविद्यालय में बसता ज्ञान अपार।
खेतों की खुशबू, मिट्टी की पहचान,
यहीं से सीखते हम जीवन का विज्ञान।
खातों की शाखा में मेहनत का है मान,
अंकों के संग बुनते हम भविष्य की उड़ान।
लेखा-जोखा सिर्फ कागजों की बात नहीं,
हर संख्या में छिपी है किसान की कहानी कहीं।
पसीने की कीमत, हर दाने का हिसाब,
यहीं सिखाता है जीवन का सच्चा जवाब।
उम्मेदगंज का नाम, गर्व से लें हम सब,
ज्ञान और कर्म से रचें नया रब।
चलो बढ़ें आगे, सपनों को दें आकार,
कृषि और लेखा से करें देश का श्रृंगार।

कमल सुमन
कम्प्यूटर ऑपरेटर



“बेरोजगार और उसका कमरा”

चार दीवारों में सिमटा हुआ एक सपना,
छत पर टिके हैं अधूरे अरमान,
खिड़की से झांकती धूप पूछती है रोज-
“आज मिला क्या कोई काम ?”
एक कोना है जहाँ उम्मीद रखी है,
दूसरे में थकान सोती है चुपचाप,
फर्श पर बिखरे कागज, कुछ रिज्यूमे,
और मन में उठता अनगिनत सवाल का सैलाब।
घड़ी की टिक-टिक जैसे ताना मारती,
“वक्त निकल रहा है, कुछ कर भी ले”,
पर दिल कहता-“मौका आएगा जरूर”,
बस किस्मत थोड़ी देर से है, ये मान भी ले।
एक कमरा है, छोटा सा जहाँ,
सपनों की भीड़ लगी रहती है,
बेरोजगारी सिर्फ हालत नहीं,
ये रोज खुद से एक जंग भी होती है।
फिर भी हर सुबह उठता है इंसान,
नई उम्मीद का दीप जलाकर,
कि शायद आज दरवाजा खटकेगा,
और बदलेगा ये कमरा-एक नई दुनिया में जाकर।

-निरंजन दवे क्लर्क ग्रेड-II

विद्यार्थी जीवन का संघर्ष



जीवन की राह में पहला पड़ाव, विद्यार्थी बनकर चलता नव प्रवाह।
नन्हे सपनों की गठरी लेकर, भविष्य गढ़ने का लेता चाह।
कंधों पर बस्ता भारी होता, पर मन में हौसला उससे भारी
ज्ञान की लौ जलाने को, हर दिन करता तैयारी।
सुबह सवेरे उठना पड़ता, नींद अधूरी रह जाती है
किताबों के पन्नों में ही, दुनिया उसकी बस जाती है।
कभी गणित सताता उसको, कभी विज्ञान उलझाता है
इतिहास की गहराई में, वो खुद को ही खो जाता है।
शिक्षकों की उम्मीदें ऊँची, माता-पिता का विश्वास
इन सबके बीच संभलकर, बनाता अपने सपनों का आकाश।
दोस्तों संग खेल की चाहत, पर समय की कमी सताती
मस्ती के पल छूट जाते, जिम्मेदारी पास बुलाती।
परीक्षा का जब समय आए, दिल की धड़कन तेज हो जाती
रातों की मेहनत और लगन, कागज पर उतर जाती।
कभी सफलता मुस्काती है, कभी असफलता रुलाती है
पर हर गिरकर फिर उठ जाना, नई सीख सिखाती है।
संघर्षों की इस कठिन राह में, वो खुद को मजबूत बनाता
धैर्य साहस और मेहनत से, जीवन का अर्थ समझ पाता।
एक दिन ऐसा भी आता, जब मेहनत रंग दिखाती है
विद्यार्थी जीवन का संघर्ष, सफलता में बदल जाता है।
तब पीछे मुड़कर देखे जब, तो गर्व से सिर उठाता है।
हर कठिन पल की याद उसे और भी आगे बढ़ाता है।
विद्यार्थी जीवन का ये संघर्ष, सिर्फ कठिनाई की कहानी नहीं
यह आत्मविश्वास की नींव है और उज्ज्वल भविष्य की निशानी यही।

मुकेश पंकज
प्रयोगशाला सहायक, कृषि महाविद्यालय, कोटा

भारत का अजेय योद्धा “महाराणा प्रताप”

बकरों से बाघ लड़े, भिड़ गये सिंह मुग-छौनों से।
घोड़े गिर पड़े गिरे हाथी, पैदल बिछ गये बिछौनों से।।11।।
हाथी से हाथी जूझ पड़े, भिड़ गये सवार सवारों से।
घोड़ों पर घोड़े टूट पड़े, तलवार लड़ी तलवारों से।।12।।
हय-रुण्ड गिरे, गज-मुण्ड गिरे, कट-कट अवनी पर शुण्ड गिरे।
लड़ते-लड़ते अरि झुण्ड गिरे, भू पर हय विकल बितुण्ड गिरे।।13।।
क्षण महाप्रलय की बिजली सी, तलवार हाथ की तड़प-तड़प।
हय-गज-रथ-पैदल भगा भगा, लेती थी बैरी वीर हड़प।।14।।
क्षण पेट फट गया घोड़े का, हो गया पतन कर कोड़े का।
भू पर सातंक सवार गिरा, क्षण पता न था हय-जोड़े का।।15।।
चिंगघाड़ भगा भय से हाथी, लेकर अंकुश पिलवान गिरा।
झटका लग गया, फटी झालर, हौदा गिर गया, निशान गिरा।।16।।
कोई नत-मुख बेजान गिरा, करवट कोई उत्तान गिरा।
रण-बीच अमित भीषणता से, लड़ते-लड़ते बलवान गिरा।।17।।
होती थी भीषण मार-काट, अतिशय रण से छाया था भय।
था हार-जीत का पता नहीं, क्षण इधर विजय क्षण उधर विजय।।18।।
कोई ब्याकुल भर आह रहा, कोई था विकल कराह रहा।
लोहू से लथपथ लोथों पर, कोई चिल्ला अल्लाह रहा।।19।।
धड़ कहीं पड़ा, सिर कहीं पड़ा, कुछ भी उनकी पहचान नहीं।
शोणित का ऐसा वेग बढ़ा, मुरदे बह गये निशान नहीं।।20।।
मेवाड़-केसरी देख रहा। केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण, वह मान-रक्त का प्यासा था।।21।।
चढ़कर चेतक पर घूम-घूम, करता मेना-रखवाली था।
ले महा मृत्यु को साथ-साथ, मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।22।।
रण-बीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा को पाला था।।23।।
गिरता न कभी चेतक-तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।।24।।
जो तनिक हवा से बाग हिली, लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था।।25।।
कौशल दिखलाया चालों में, उड़ गया भयानक भालों में।
निभीक गया वह ढालों में, सरपट दौड़ा करवालों में।।26।।
है यहीं रहा, अब यहां नहीं, वह वहीं रहा है वहां नहीं।
थी जगह न कोई जहां नहीं, किस अरि-मस्तक पर कहां नहीं।।27।।
बढ़ते नद-सा वह लहर गया, वह गया गया फिर उहर गया।
विकराल ब्रज-मय बादल-सा, अरि की सेना पर घहर गया।।28।।
भाला गिर गया, गिरा निषंग, हय-टापों से खन गया अंग।
वैरी-समाज रह गया दंग, घोड़े का ऐसा देख रंग।।29।।
चढ़ चेतक पर तलवार उठा, रखता था भूतल-पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट, करता था सफल जवानी को।।30।।
कलकल बहती थी रण-गंगा, अरि-दल को डूब नहाने को।
तलवार वीर की नाव बनी, चटपट उस पार लगाने को।।31।।
वैरी-दल को ललकार गिरी, वह नागिन-सी फुफकार गिरी।
था शोर मौत से बचो,बचो, तलवार गिरी, तलवार गिरी।।32।।
पैदल से हय-दल गज-दल में, छिप-छप करती वह विकल गई।
क्षण कहां गई कुछ, पता न फिर, देखो चमचम वह निकल गई।।33।।
क्षण इधर गई, क्षण उधर गई, क्षण चढ़ी बाढ़-सी उतर गई।
था प्रलय, चमकती जिधर गई, क्षण शोर हो गया किधर गई।।34।।
क्या अजब विषैली नागिन थी, जिसके डसने में लहर नहीं।
उतरी तन से मित गये वीर, फेला शरीर में जहर नहीं।।35।।
थी छुरी कहीं, तलवार कहीं, वह बरछी-असि खरधार कहीं।
वह आग कहीं अंगार कहीं, बिजली थी कहीं कटार कहीं।।36।।
लहराती थी सिर काट-काट, बल खाती थी भू पाट-पाट।
बिखराती अवयव बाट-बाट, तनती थी लोहू चाट-चाट।।37।।
सेना-नायक राणा के भी, रण देख-देखकर चाह भरे।
मेवाड़-सिपाही लड़ते थे, दूने-तिगुने उत्साह भरे।।38।।
क्षण मार दिया कर कोड़े से, रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण-कौशल दिखा दिया, चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।39।।



क्षण भीषण हलचल मचा-मचा, राणा-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने को यह, रण-चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।30।।
वह हाथी-दल पर टूट पड़ा, मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा शोणित का नाला फूट पड़ा।।31।।
जो साहस कर बढ़ता उसको, केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक, बरछे पर उसको रोक दिया।।32।।
क्षण उछल गया अरि घोड़े पर, क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
वैरी-दल से लड़ते-लड़ते, क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।33।।
क्षण भर में गिरते रूण्डों से, मदमस्त गर्जों के झुण्डों से,
घोड़ों से विकल वितुण्डों से, पट गई भूमि नर-मुण्डों से।।34।।
ऐसा रण राणा करता था, पर उसको था संतोष नहीं,
क्षण-क्षण आगे बढ़ता था वह, पर कम होता था रोष नहीं।।35।।
कहता था लड़ता मान कहां, मैं कर लूं रक्त-स्नान कहां।
जिस पर तय विजय हमारी है, वह मुगलों का अभिमान कहां।।36।।
भाला कहता था मान कहां, घोड़ा कहता था मान कहां?
राणा की लोहित आंखों से, रव निकल रहा था मान कहां।।37।।
लड़ता अकबर सुल्तान कहां, वह कुल-कलंक है मान कहां?
राणा कहता था बार-बार, मैं करूं शत्रु-बलिदान कहां?।।38।।
तब तक प्रताप ने देख लिया, लड़ रहा मान था हाथी पर।
अकबर का चंचल सामिमान, उड़ता निशान था हाथी पर।।39।।
वह विजय-मन्त्र था पढ़ा रहा, अपने दल को था बढ़ा रहा।
वह भीषण समर-भवानी को, पग-पग पर बलि था चढ़ा रहा।।40।।
फिर रक्त देह का उबल उठा, जल उठा क्रोध की ज्वाला से।
घोड़ा से कहा बढ़ो आगे, बढ़ चलो कहा निज भाला से।।41।।
हय-नस नस में बिजली दौड़ी, राणा का घोड़ा लहर उठा।
शत-शत बिजली की आग लिये, वह प्रलय-मेघ-सा घहर उठा।।42।।
क्षय अमित रोग, वह राजरोग, ज्वर सपन्नपात लकवा था वह।
था शोर बचो घोड़ा-रण से, कहता हय कौन, हवा था वह।।43।।
तनकर भाला भी बोल उठा, राणा मुझको विश्राम न दे।
बैरी का मुझसे हृदय गोभ, तू मुझे तनिक आराम न दे।।44।।
खाकर अरि-मस्तक जीने दे, बैरी-उर-माला सीने दे।
मुझको शोणित की प्यास लगी, बढ़ने दे शोणित पीने दे।।45।।
मुरदों का ढेर लगा दूँ मैं, अरि-सिंहासन थहरा दूँ मैं।
राणा मुझको आज्ञा दे दे, शोणित सागर लहरा दूँ मैं।।46।।
रंचक राणा ने देर न की, घोड़ा बढ़ आया हाथी पर।
वैरी-दल का सिर काट-काट, राणा चढ़ आया हाथी पर।।47।।
गिरि की चोटी पर चढ़कर, किरणों निहारती लाशें,
जिनमें कुछ तो मुरदे थे, कुछ की चलती थी सांसें।।48।।
वे देख-देख कर उनको, मुरझाती जाती पल-पल।
होता था स्वर्णिम नभ पर, पक्षी-क्रन्दन का कल-कल।।49।।
मुख छिपा लिया सूरज ने, जब रोक न सका रूलाई।
सावन की अन्धी रजनी, वारिद-मिस रोती आई।।50।।

डॉ. राकेश कुमार यादव
सहायक प्रध्यापक (उद्यानिकी)

“वह पौधा जो हार मानने को तैयार नहीं था”

महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के एक छात्र ने दीक्षारम्भ कार्यक्रम के दौरान “एक पेड़ माँ के नाम” अभियान के अंतर्गत अपनी कक्षा के सभी सह-पाठियों के साथ कैम्पस में एक पौधा रोपित किया। सभी छात्रों की तुलना में उसका पौधा सबसे कमजोर था। फिर भी उसे उस नन्हे पौधे से लगाव था। वो नियमित उस पौधे को पानी से सींचता और आस-पास की मिट्टी से घास निकाल कर गुड़ाई करता।

कुछ दिन बीते, जहाँ अन्य सभी छात्रों के पौधे बढ़ने लगे, उनमें नयी पत्तियाँ निकलने लगीं, वहीं उसका छोटा सा पौधा बढ़ने की बजाय धीरे-धीरे पीला पड़ने लगा। न ही कोई नयी पत्तियाँ, न ही वृद्धि का कोई संकेत, बस धीरे-धीरे सूखता चूँठ। निराशा धीरे-धीरे उसके मन में घर करने लगी। फिर भी, हर सुबह वह उस जगह पर जाता, ध्यान से पानी देता, मिट्टी की हलकी गुड़ाई करता और चुपचाप लौट आता।

सप्ताह बीत गए और यह धैर्य की परीक्षा बन गया। कुछ लोग उसकी इस जिद का मजाक भी उड़ाने लगे। “शायद उस पौधे की जड़ें ही गल गईं,” वे कहते। लेकिन वह लगा रहा, इसलिए नहीं कि उसे अपनी सफलता का पूरा भरोसा था, बल्कि इसलिए कि उसे प्रक्रिया पर विश्वास था।

फिर एक दिन, अचानक ही, उस सूखते पौधे से छोटी सी एक कोंपल निकली। वह नाजुक थी, पर हरे रंग की थी। समय के साथ वह कोंपल पत्ते में बदल गई और साथ ही उस पौधे से कई नयी कोंपले फूटने लगीं, नयी शाखाएं निकलने लगीं। चार वर्ष पश्चात जब दीक्षांत समारोह का समय आया, तो उसका पौधा सबसे ऊँचा, सबसे स्वस्थ और सबसे सशक्त बनकर खड़ा था। जब उससे उसकी सफलता का रहस्य पूछा गया, तो उसने बस इतना कहा, “पौधा कभी समस्या नहीं था, वह तो यह देख रहा था कि क्या मुझमें उसके साथ बढ़ने का धैर्य है अथवा नहीं।”

प्रिय विद्यार्थियों, महाविद्यालय का जीवन भी उस पौधे की तरह ही है। हर प्रयास का परिणाम तुरंत नहीं मिलता। ऐसे क्षण आएं जब आपकी मेहनत अनदेखी लगेगी, आपकी प्रगति दिखाई नहीं देगी और आपका आत्मविश्वास डगमगा सकता है। लेकिन याद रखें, विकास अक्सर सतह के नीचे चुपचाप हो रहा होता है, आपकी जड़ों को मजबूत बना रहा होता है।

सफलता केवल प्रतिभा या अवसर पर निर्भर नहीं करती, यह निरंतरता, धैर्य और आत्मविश्वास का परिणाम होती है। इन महत्वपूर्ण वर्षों में, धीमी प्रगति से निराश न हों, बल्कि अपने सपनों को समर्पण और ईमानदारी से सींचते रहें। क्योंकि एक दिन, उस पौधे की तरह, आप भी उभरेंगे, पहले से अधिक मजबूत, और दुनिया का सामना करने के लिए तैयार होंगे।

डॉ. एस. के. जैन
(अधिष्ठाता)

गलती

भरी दुपहरी में पढ़ा लिखा विकास पौधों के लिए गड्डे व क्यारियाँ तैयार कर रहा था, क्योंकि बरसात का मौसम जो आने वाला था, साहब ने उसे तीन दिन में 100 से ज्यादा गड्डे खोदने का निर्देश दिया था, क्योंकि कुछ दिन बाद बड़े साहब का जन्मदिन जो आने वाला था, इसका पता उन्हें आज ही चला था। अगर बड़े साहब के हाथ से हमारे साहब उनके जन्मदिन पर पौधारोपण का कार्य करवाते हैं तो उनकी छवि बड़े साहब के मन में अच्छी बनेगी व उनके भविष्य में प्रमोशन में फलदायक साबित होगी, बस इसी वजह से हमारे साहब ने तीन दिन में सारी तैयारियाँ करने का सख्त आदेश दे दिया।

जून की प्रचंड गर्मी में साहब के प्रमोशन के लिए बाहरवीं उत्तीर्ण विकास, जी-जान से लगा हुआ था, उसे रोड़ के दोनों तरफ की हैज की कटाई, पौधों की निराई-गुड़ाई व काँट-छाँट आदि कार्य करने थे। कभी-कभी विकास मुझसे मिलता तो मुझे गुरुजी कहकर संबोधित करता, कार्यक्रम कोई सा, किसी का भी हो छोटे-मोटे काम के लिए विकास को ही याद किया जाता था, चूँकि कॉलेज में नए वर्ष के विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ होने वाला था तो विकास ने मुझसे पूछा, गुरुजी क्या मैं भी कॉलेज का फॉर्म भर दूँ व पढ़ाई करूँ, मैंने कहा भाई क्यों नहीं, तू तो यही रहता व काम करता है तुझे तो किसी भी तरह की कोई परेशानी भी नहीं होगी, ऐसा सुनकर उसके मुख पर एक विशेष चमक उत्पन्न हुई व मन में उसके सहयोगी प्रोफेसरों का चित्र उभर आया कि सभी तो मुझे पसंद करते हैं, मेरी पढ़ाई में भी सभी प्रोफेसर जरूर मेरी मदद करेंगे।

काउंसलिंग के दिन कॉलेज में विद्यार्थियों कि भारी भीड़ थी, उस दिन भी विकास प्रोफेसरों के कहने पर सजावटी गमलों व पौधों को मुख्य बरामदों के सामने रख रहा था, कभी पानी भरना, कभी इधर-उधर जाना, किसी को बुलाना, अनेको काम कर रहा था, चूँकि काउंसलिंग शाम को

5 बजे तक चलनी थी अतः विकास तो निश्चित था कि उसका काम तो बड़ी आसानी से हो जायेगा इसलिए वो 4 बजे बाद काउंसलिंग की लाइन में लगा, 4 बजकर 25 मिनट पर उसका नंबर आया, कार्यालय के बड़े बाबूजी ने उसकी दसवीं, बारहवीं कि मार्कशीट चेक की और मूल निवासी व जाति प्रमाण पत्र माँगा तो उसने प्रस्तुत कर दिया, चूँकि विकास बी. पी. एल. परिवार से था तो उसकी फीस माफ हो सकती थी, अतः इस बारे में विकास ने बड़े बाबूजी से पूछ तो उन्होंने कहा कि ये तुम्हारा जाति प्रमाण पत्र पुराना है एवं तुम्हे नया बनाना पड़ेगा या फिर पूरी फीस जमा करानी पड़ेगी।

विकास यकायक सुन्न हो गया, फीस के 18000 रुपये कहा से देगा, समय भी कम था, 5 बजे बाद फॉर्म लेने कि अनुमति किसी को नहीं थी, विकास भागता हुआ बड़े साहब के पास गया व सारी व्यथा सुनाई, तो बड़े साहब ने भी नियमों का हवाला देकर पल्ला झाड़ लिया, वापस काउंसलिंग कक्ष तक आते-आते 5 बज चुके थे और बाहर से आये हुए अधिकतर विद्यार्थी वापस घर जा चुके थे एवं सभी काउंसलिंग के अधिकारी कर्मचारी भी घर जाने को आतुर थे। विकास दूर खड़ा यही सोचता रहा कि आखिर उसकी गलती कहाँ है, वो तो सुबह से ही काउंसलिंग में सभी कि मदद कर रहा था और सभी ने कहा था ना कि फॉर्म तो भर, हम देख लेंगे।

अब क्या, दूसरे दिन विकास पुनः सुबह 8 बजे बगीचे में गड्डे करता हुआ मुझे मिला तो मैंने भी उससे काउंसलिंग के बारे में बात करना उचित नहीं समझा, परन्तु उसकी आँखों में छिपा दर्द अपनी दास्तों बयों कर रहा था। आखिर, मेरी गलती क्या है, ये सवाल उसे व मुझे हमेशा कौंधता रहा।

डॉ. प्रवीण कुमार चचैया
(तकनीकी सहायक)

मैदान से मिली सीख

विदित हमेशा से एक क्रिकेटर बनने का सपना देखता था। हर शाम, अपने काम खत्म करने के बाद, वह अपनी पुरानी बैट और टेनिस बॉल लेकर मैदान की ओर दौड़ पड़ता। उसके लिए क्रिकेट सिर्फ एक खेल नहीं, यह कुछ बनने का मौका था। एक साल, उसे जिला स्तर के टूर्नामेंट में खेलने का मौका मिला। पूरे गांव ने उस पर भरोसा जताया और उसे प्रोत्साहित किया। जाते समय उसके पिता ने कहा, “दिल से खेलना।”

मैच के दिन विदित मैदान पर उतरा, थोड़ा घबराया हुआ, लेकिन उत्साहित। उसकी टीम को रन चाहिए थे और सबकी नजरें उसी पर थीं। उसने बैट मजबूती से पकड़ा। गेंदबाज दौड़ते हुए आया, गेंद फेंकी, और विदित ने जोर से शॉट खेला। गेंद हवा में ऊँची गई, और सीधे फील्डर के हाथों में चली गई। पहली ही गेंद पर आउट। तालियों की आवाज अचानक खामोशी में बदल गई। विदित सिर झुकाकर वापस लौटा। उसे लगा जैसे उसने सबको निराश कर दिया हो। कई दिनों तक वह मैदान नहीं गया। उसने सोचा, “शायद मैं इतना अच्छा नहीं हूँ।” एक शाम, उसका कोच उसे अकेले बैठा हुआ मिला। उसने पूछा, “तो तुम शून्य पर आउट हो गए?” विदित ने चुपचाप सिर हिला



दिया। कोच मुस्कुराया और बोला, “अच्छा है।” विदित हैरान हो गया। कोच ने कहा, “इसका मतलब है कि तुमने उस पल का सामना किया। क्रिकेट और जिंदगी दोनों में असफलता हमें वह सिखाती है, जो अभ्यास भी नहीं सिखा सकता।” ये शब्द विदित के दिल में उतर गए। वह फिर से मैदान पर लौटा और पहले से ज्यादा मेहनत करने लगा। उसने धैर्य, एकाग्रता और दबाव में खेलने की कला सीखी। धीरे-धीरे वह बेहतर होता गया। अगले साल, विदित फिर उसी टूर्नामेंट में खेला। इस बार वह शांत रहा, समझदारी से खेला और अपनी पारी को संभाला। जब उसने जीत के लिए रन बनाए, तो मैदान तालियों से गूँज उठा, लेकिन विदित सिर्फ हल्की मुस्कान के साथ खड़ा रहा। उसे पता था कि असली जीत वह मैच नहीं था, बल्कि वह असफलता थी जिसने उसे आगे बढ़ना सिखाया। तब से वह सभी को यही समझाता है, क्रिकेट हो या जिंदगी, हर “आउट” एक मजबूत वापसी की शुरुआत होती है।



डॉ. मनीष शर्मा
सह-आचार्य (पादप प्रजनन एवं अनुवंशिकी)

विज्ञान और परंपरा: कृषि का नवयुग

नैनो-यूरिया, और ड्रोन की उड़ान भी है, पर दादा-नाना के अनुभव का सम्मान भी है। विज्ञान से मिल कर, परंपरा जब साथ चलती है, तभी तो धरती माँ हमारी मुस्कान पाती है। हमने मिट्टी से माँगा है जो, वह उधार चुकाना है। फसलें लेनी हैं सौ गुनी, पर पर्यावरण बचाना है। यह कॉलेज सिखाता है, बस लेना नहीं, देना भी है वापस, यह ज्ञान भुलाना नहीं। फार्मर की मेहनत को हम सम्मान देंगे, हर संकट का वैज्ञानिक समाधान देंगे। जमीन की सेहत, जलवायु की चिंता, लाएँगे क्रांति, मिटाएँगे हर विपदा। फसल चक्र, ड्रोन और डेटा का कमाल, हम करेंगे हरित क्रांति का तीसरा काल। देखो! ट्रैक्टर नहीं, यह तो उन्नति का रथ है, खेतों से होकर गुजरता हमारा पथ है। हमारा कॉलेज सिर्फ डिग्री नहीं देता, यह तो देश को खिलाने का हुनर देता। निश्चित करो तुम भी, यही तुम्हारा लक्ष्य हो, कृषि-वीर बनो, जहाँ सारा जग समक्ष हो।

ये कक्षाएँ नहीं, भविष्य की नींव हैं, जहाँ सपने नहीं, सुलगते बिल्व हैं। हम वो नई पौध हैं, जो ज्ञान से भरे हैं, जो मिट्टी की कसम खाकर खड़े हैं। लैब में प्रयोग, हाथों में बीजों की पोटली, बदलनी है हमें कृषि की हर झोपड़ी।



मनीष यादव

विद्यावाचस्पती (शास्य विज्ञान)

आधुनिक जीवन में सब्जियों का महत्व और संतुलित आहार

भोजन में सब्जियों का प्रमुख स्थान है। सब्जियों से हमें खाद्य रेशा, खनिज, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट, वसा तथा प्रोटीन जैसे आवश्यक पौष्टिक तत्व प्राप्त होते हैं। सब्जियाँ हमारे भोजन को सरस, स्वादिष्ट एवं पौष्टिक बनाने में सहायक होती हैं। नवीनतम शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि सब्जियों में पाए जाने वाले विशेष योगिक जैसे बीटा-कैरोटीन, विटामिन C, विटामिन E (टोकोफेरॉल), फ्लेवोनोइड्स तथा ग्लूकोसिनोलेट्स शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं, अतः सब्जियों को रक्षात्मक भोजन कहा जाता है।

वर्तमान समय में यह भी सिद्ध हो चुका है कि नियमित रूप से सब्जियों का सेवन करने से कई जीवनशैली संबंधी रोगों जैसे मधुमेह, हार्ट डिजिज तथा ओबेसिटी से बचाव संभव है। हम कितना भी भोजन करें, यदि वह संतुलित एवं पौष्टिक नहीं है तो कुपोषण से होने वाली अनेक बीमारियों का खतरा बना रहता है। ऐसी स्थिति में सब्जियों का महत्व और बढ़ जाता है। सब्जियाँ शरीर में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों की पूर्ति करती हैं, जो कम मात्रा में आवश्यक होते हुए भी जैव-रासायनिक क्रियाओं के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। मांस, पनीर तथा अन्य वसायुक्त पदार्थों के पाचन के दौरान बनने वाले अम्लों को निष्प्रभावी करने में भी सब्जियाँ सहायक होती हैं। इनमें उपस्थित खाद्य रेशा पाचन क्रिया को सुचारु बनाता है तथा कब्ज को रोकता है। विटामिन की कमी, आयरन की कमी से होने वाली रक्ताल्पता तथा अन्य पोषण संबंधी रोगों के निवारण में भी सब्जियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

भारतीय आहार में अभी भी सब्जियों का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण लोगों में पोषण संबंधी जानकारी का अभाव तथा संतुलित आहार के प्रति जागरूकता की कमी है। आधुनिक पोषण मानकों तथा वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन के अनुसार एक व्यक्ति को प्रतिदिन लगभग 400-500 ग्राम सब्जियाँ एवं फल का सेवन करना चाहिए। इसमें लगभग 150 ग्राम हरी पत्तेदार सब्जियाँ, 100-150 ग्राम जड़ वाली सब्जियाँ तथा 150 ग्राम अन्य प्रकार की सब्जियाँ शामिल होनी चाहिए।

पोषक तत्वों की आवश्यकता क्यों?

संतुलित आहार में वे सभी पोषक तत्व उपस्थित होते हैं जो शरीर की विभिन्न जैव-रासायनिक क्रियाओं के लिए आवश्यक हैं। संतुलित आहार में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, जल, विटामिन, रेशा एवं खनिज पदार्थों का समुचित मात्रा में होना आवश्यक है। खनिज तत्वों में लौह, आयोडीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, सोडियम, पोटैशियम, क्लोरीन, मैग्नीशियम, जिंक, कॉपर आदि प्रमुख हैं। इनकी कमी से शरीर में विभिन्न प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं तथा मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः दैनिक आहार में इनका संतुलित मात्रा में सेवन आवश्यक है, जिससे शरीर के निर्माण, वृद्धि एवं नियंत्रण संबंधी कार्य सुचारु रूप से चलते रहें।

संतुलित आहार में कच्ची शाक-सब्जियों जैसे गाजर, टमाटर, धनिया, पुदीना, प्याज, खीरा, हरी मिर्च, चुकन्दर, मूली एवं पत्तागोभी का प्रयोग करना चाहिए। सलाद शरीर को ताजगी प्रदान करता है, भूख बढ़ाता है तथा पाचन शक्ति को मजबूत बनाता है और वसायुक्त भोजन के पाचन में सहायक होता है।

शरीर के निर्माण में मुख्य रूप से कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं फॉस्फोरस का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जबकि लौह तत्व रक्त का प्रमुख अवयव है। इसके अतिरिक्त जिंक, मोलिब्डेनम, तांबा, मैग्नीज आदि तत्व शरीर में एंजाइम के उत्प्रेरक के रूप में विभिन्न जैव-रासायनिक क्रियाओं को सम्पन्न करते हैं। आयोडीन थायरॉक्सिन हार्मोन का प्रमुख घटक है, जिसकी कमी से घेंघा रोग हो जाता है तथा बच्चों के मानसिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सोडियम एवं पोटैशियम शरीर के द्रव संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा क्लोराइड एवं बाइकार्बोनेट आयनों के साथ मिलकर अम्ल-क्षार संतुलन को नियंत्रित करते हैं। सामान्यतः मानव शरीर से प्रतिदिन 20-30 ग्राम खनिज पदार्थ उत्सर्जित होते हैं, जिनकी पूर्ति भोजन के माध्यम से, विशेषकर सब्जियों के सेवन से की जानी चाहिए। बढ़ते हुए बच्चों एवं किशोरों में खनिज एवं लवणों की आवश्यकता अधिक होती है, क्योंकि ये उनके ऊतकों की वृद्धि एवं विकास में सहायक होते हैं।



खाद्य रेशा : अधिकांश सब्जियों, विशेषकर हरी पत्तेदार सब्जियों में पर्याप्त मात्रा में खाद्य रेशा पाया जाता है। यह न केवल पाचन क्रिया को सुधारता है, बल्कि कब्ज को रोकने में भी सहायक होता है। आधुनिक शोध के अनुसार, खाद्य रेशा हृदय रोगों के जोखिम को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेशा रक्त धमनियों में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है, जिससे हाई ब्लड प्रेशर तथा स्टोक जैसी बीमारियों की संभावना कम हो जाती है। घुलनशील रेशे जैसे गम एवं पेक्टिन रक्त में शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करते हैं, जिससे मधुमेह का खतरा घटता है।

कम रेशे वाले आहार से आंतों के कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। वर्तमान पोषण मानकों के अनुसार एक स्वस्थ वयस्क के लिए लगभग 30-40 ग्राम रेशा प्रतिदिन आवश्यक माना गया है। रेशे के अच्छे स्रोत हैं मेथी, पालक, चौलाई, सरसों का साग, बथुआ, लेट्यूस, ब्रसेल्स स्प्राउट्स, शलजम, बंदगोभी, गाजर, प्याज एवं सेम आदि। अतः दैनिक आहार में इनका समावेश अत्यंत आवश्यक है।

सब्जियों से कैंसर की रोकथाम : विश्व स्तर पर किए गए नवीन शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि सब्जियाँ केवल विटामिन एवं खनिज ही नहीं देतीं, बल्कि इनमें ऐन्थोसाइनिन, पॉलीफेनॉल, ट्राइटरपेनॉइड्स तथा सल्फर युक्त यौगिक भी पाए जाते हैं, जो कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों की रोकथाम में सहायक होते हैं। विशेष रूप से गोभी वर्गीय सब्जियों (क्रूसीफेरस सब्जियाँ) में पाया जाने वाला ग्लूकोसिनोलेट नामक यौगिक कैंसर-रोधी गुणों से युक्त होता है। यह शरीर में सक्रिय होकर हानिकारक तत्वों के निष्कासन में सहायता करता है।

इसके अतिरिक्त बीटा-कैरोटीन, विटामिन C, विटामिन E तथा सेलेनियम जैसे तत्व शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करते हैं। ये शरीर में बनने वाले फ्री रेडिकल्स एवं रिएक्टिव ऑक्सीजन स्पीशीज की सक्रियता को कम करते हैं। ये फ्री रेडिकल्स कोशिकाओं एवं डीएनए को क्षति पहुंचाकर कैंसर के खतरे को बढ़ाते हैं।

सब्जियों में उपस्थित एंटीऑक्सीडेंट इन हानिकारक तत्वों को निष्क्रिय कर शरीर की रक्षा करते हैं। इसी कारण आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में सब्जियों को "रोग-प्रतिरोधक आहार" के रूप में विशेष महत्व दिया गया है।

वर्तमान समय में लोगों में पोषण के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे पौष्टिक सब्जियों के उत्पादन एवं उपभोग की ओर रुझान भी बढ़ा है। संतुलित आहार के लिए यह आवश्यक है कि हम विभिन्न प्रकार की सब्जियों का सेवन करें, ताकि शरीर को सभी आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त हो सकें।



सारणी 1: प्रमुख पौष्टिक तत्वों के अनुसार सब्जियों का वर्गीकरण

पौष्टिक तत्व	प्रमुख सब्जियाँ
कार्बोहाइड्रेट	आलू, शकरकंद, अरबी, सूरन (जिमीकंद), चुकन्दर, गाजर, प्याज, कमलककड़ी, सेम, ग्वार की फली, लहसुन, कुलफा, करी पत्ता
प्रोटीन	मटर, सेम, लोबिया, बाकला, चौलाई, सरसों, मेथी, पालक, बथुआ, ग्वार की फली, कुलफा, करी पत्ता, लहसुन
वसा	कद्दू, तोरी, खरबूजा, खीरा, करेला आदि के बीज (स्वस्थ वसा के स्रोत)

सारणी 2 : प्रमुख विटामिन एवं उनके सब्जी स्रोत

विटामिन	प्रमुख स्रोत
विटामिन A (बीटा-कैरोटीन)	गाजर, पालक, पत्तागोभी, टमाटर, सरसों का साग, चौलाई, धनिया, पुदीना, शिमला मिर्च, शकरकंद, बथुआ, सहजन पत्ती
विटामिन E	हरी पत्तेदार सब्जियाँ, सलाद पत्ता, शलजम पत्ती, करी पत्ता
विटामिन K	पालक, सरसों का साग, बंदगोभी, लेट्यूस, हरी पत्तेदार सब्जियाँ
विटामिन C	आंवला, शिमला मिर्च, करेला, बंदगोभी, फूलगोभी, टमाटर, पालक, हरी मिर्च, पुदीना
विटामिन B1 (थायमिन)	पालक, फूलगोभी, भिंडी, लोबिया, टमाटर, गाजर
विटामिन B2 (राइबोफ्लेविन)	बैंगन, फूलगोभी, पालक, पुदीना, चौलाई
निकोटिनिक अम्ल (B3)	आलू, मूली, चुकन्दर, कमल ककड़ी, चौलाई
पैंटोथेनिक अम्ल (B5)	शकरकंद, फूलगोभी, लोबिया
विटामिन B6	आलू, शकरकंद, फूलगोभी
फोलिक अम्ल (B9)	पालक, चौलाई, बंदगोभी, पुदीना, प्याज
बायोटिन (B7)	आलू, गाजर, फूलगोभी, लोबिया

आदर्श कुमार टाटू
विद्यावाचस्पती (पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी)

I went out for a little stroll today



I went out for a little stroll today,
I passed by a tiny house, painted blush; insides of which smelt like potpourri.
I saw a nursery with flowers small, its tiny inhabitants painted in all seven shades,
I spotted a crowd of children going about their self-made games, from where my
glance travelled to the distant grass covered sheds.
I managed to witness a wedding grand,
Its procession in glee, accompanied by a rookie band.
On one side of the street, I observed hustle in cacophony, and on the opposite a
congregation praying in quietude.
I turned back for home with the sun setting on my back, keeping all that I had
seen in my mind intact, I think at one point, I passed by a sight alluring that it
reminded me of you in time; with it, your benevolence and the Proverb



Jyotishman
M.Sc. (GPB)

A call back to the soil

We fed the fields with borrowed strength,
Quick greens, quick gains, at nature's expense.
Chemicals soaked the Waiting land,
Left tired soil and poisoned sand.

Roots stood tall yet life ran thin,
the earth grew weak beneath the skin.
River carried what field couldn't keep,
Air breathed in silence, thick and deep.

The fields looked green, the yield was high,
But deep inside the soil would cry.
Food looked full, yet carried a cost,
Health and balance slowly lost

This was not the way to grow,
Only hustle We failed to know.
The earth does not ask much to give,
Just care, so all of us can live.

Natural farming is gentle and wise,
Give soil care, not synthetic lies.
It keeps the soil healthy, the future alive.

Farm with nature slow and kind,
Healthy earth, a healthy mind.



Samridhi
M.Sc. (Agronomy)

Precision in the Field

In fields where golden harvests sway,
New tools now guide the farmer's way.
Drones rise high with watchful eyes,
soil and scanning skies.
Sensors whisper from the ground,
Telling where nutrients are found.
GPS draws lines straight and true,
Saving water, seeds, and effort too.
With data shining clear and bright,
Farmers choose what's just and right.
Technology and earth unite
Precision makes the future bright.



Nisha Nagar
M.Sc. (Agronomy)

The Organic Way



Seeds sink softly into living earth,
Where nature sings the song of birth.
Just sunlight, soil, and buzzing bees.
Compost beds enrich the ground,
Life returns where health is found.
Green leaves stretch with morning's grace,
Nature's balance in every place.
With gentle hands the farmer sows,
And slowly, pure abundance grows.
Organic fields in quiet charm—
Healing the Earth, farm by farm.



Monti Nagar
M.Sc. (Agronomy)

Discipline

Discipline is a quiet flame,
Not loud, not wild, without a name.
It doesn't shout, it doesn't boast,
Yet shapes the ones who need it most.
It wakes you up before the sun,
Reminds you work is never done.
It steadies hands when doubt appears,
And walks beside you through your fears.
It asks for more when you feel spent,
Turns small efforts into intent.
Not built in bursts of fleeting will,
But forged in moments calm and still.
It is the choice to carry on,
Long after fleeting drive is gone.
A silent guide, both firm and true,
That builds a stronger kind of you.



Sahil Moond
M.Sc. (Genetics & Plant Breeding)

The Art of Repotting



We are taught to grow outward.
To expand into the margins of
the syllabus,
To stretch our limbs toward the
fluorescent hum
Of midnight deadlines and
competitive ranks.

We build towering canopies of

ambition,

Curating our days into perfect, exhausting shapes,
Measuring our worth by the harvest.

But no one warns us about the roots.
How, confined to the tight clay pots of expectation,
They will begin to circle.
How they will tangle and bind,
Choking on their own desperate need for space,
Until the green leaves start to wither,
And you wake up feeling entirely empty
While doing absolutely everything.

Self-return is not a failure of momentum.
It is the quiet, radical act of repotting.

It is the deliberate closing of the laptop screen.
It is the weight of cold water on a tired face,
The slow, intentional smoothing of a moisturizer,
Reminding the mind that it lives inside a body,
And the body is not a machine.
It is rearranging your room to hold your peace,
Rather than just your textbooks.
It is leaving the soil unplanted for a season,
Knowing that fallow earth is not dead earth—
It is simply resting, remembering how to be fertile.
You do not have to be in perpetual bloom.
Stop stretching for the artificial light.
Loosen the dirt. Untie the knot.
Come back to the quiet dark of yourself,
And just breathe.



Avani Jain
M.Sc. (Agri) Genetics and Plant Breeding

Use of Biocontrol Agent in Agriculture



Biocontrol agents are used in agriculture to manage pests and diseases using beneficial organisms instead of relying only on chemical pesticides. They help protect crops, reduce residues on food, and support sustainable farming. Biocontrol agents are living organisms like insects, mites, bacteria, fungi, viruses, or other microbes used to control harmful pests, weeds, or plant diseases in fields and greenhouses. They act as predators, parasitoids, pathogens, or competitors to keep pest populations below damaging levels. Main types used in agriculture are Predators such as ladybird beetles, lacewings, and predatory mites feed directly on insect pests like aphids, whiteflies, and mites on crops. Parasitoids (tiny wasps and flies) lay eggs in or on pests such as caterpillars or aphids, the developing larvae kill the host insect. Microbial agents (for example *Bacillus thuringiensis*, *Trichoderma* fungi, baculoviruses) infect insect pests or plant pathogens and are formulated as biopesticide products sprayed on crops. Ways biocontrol is applied Farmers can release mass-reared beneficial insects or mites into fields or greenhouses to quickly reduce pest outbreaks (augmentative biocontrol). They can also conserve natural enemies already present by planting flowering strips, using trap crops, and reducing broad-spectrum chemical sprays (conservation biocontrol). Examples in crop protection in cotton, brinjal, and vegetable crops, parasitoid wasps and predators are released to manage caterpillars, aphids, and whiteflies. In many fruits and vegetables, microbial products like BT sprays against caterpillars and *Trichoderma*-based formulations against soil-borne diseases are widely used as part of integrated pest management (IPM).

Advantages and limitations in agriculture are use of biocontrol agents reduces dependence on synthetic pesticides, lowers chemical residues on food, protects beneficial insects like pollinators, and slows the development of pest resistance. However, biocontrol may act more slowly than chemicals, can be influenced by weather and field conditions, and often works best when combined with other IPM practices rather than used alone.

Gaurav Mangal
M.Sc. (Agronomy)

INSECT WANTS TO TALK TO HUMAN

A Message from the Smallest Survivors

What if the smallest creatures on Earth could speak? What if insects paused for a moment to share their story with human? This is not just imagination. It is a reflection of time, survival, intelligence, and coexistence.

I am an insect. I have heard that you study me, my life cycle, my biology, my behaviour, even my genes. So, I decided to take a moment to speak to you. I have existed on this Earth from 400 million years. I have witnessed the extinction of giant animals, and the transformation of landscapes. I have seen continents drift, climates shift, and including you evolve. I watched you learn to walk while I was already flying with highly evolved wings. I saw your discovery of fire with my advanced ultraviolet vision. I saw you clothe yourselves in animal skins while I was shedding mine through moulting. From the balcony of my nests, I watched you live in caves and slowly build civilizations. I have seen you grow from unorganized beings into an advanced society. Yet somewhere along your journey of progress, you seem to have forgotten your true potential as an intelligent species.

I too have a caste system but I do not fight in the name of religion. I defend my home and home mates but I do not destroy others'. I dedicate my life to my colony but I do not seek power or betrayal. I agree that, my nest may not match your luxury buildings, but I live peacefully with my family. I am social without social media; I am productive without a boss; I am always disciplined even no one watching; I am may be ugly but never mask my original face. You build cities but I build ecosystems, you consume, I recycle.

I have seen you step back after failure. But have you seen me? How many times have I rebuilt my nest? How many times have I fallen from heights? How many times have I lost my way? How many blood lines I lost? Yet, I never stop trying. I may feed on your crops at times, but I have never desired to conquer someone's wealth. I maintain my territory, but I am not driven by greed to invade others'.

You may overlook me, but I quietly sustain your world. I pollinate your crops. I decompose your waste. I enrich your soil. I regulate pest

populations. I rebuild the soil you degrade. I clean what you discard. I bring life back to barren lands. I was never your enemy I was always your silent partner in survival. I regret that I could not be educated like you. But when I see how intelligence is sometimes used to exploit, to destroy, to disrupt nature, I feel grateful for myself. Because survival is not just about power. It is about balance. I am not complaining. I am simply observing you from a distance. Because you never truly allowed me to come closer. But now I ask you, Will you learn from me, or continue to ignore me? Because sometimes, the smallest creatures carry the greatest lessons.....

- **The Smallest Teacher of Nature**



Dr. Kishor Pujar

Assistant Professor (Entomology)

Makerspace: An Innovation in Library & Information Services

The traditional image of a library- a silent repository of books- is undergoing a radical transformation. In the era of fourth Industrial Revolution (Industry 4.0), libraries are evolving from "places of consumption" to "**spaces of creation.**" The leading edge of this evolution is the **Makerspace**, a collaborative workspace that is redefining the landscape of Library and Information Services (LIS).



The Concept: From Collection to Creation

A Library Makerspace is a community-oriented workspace where students, researchers, and faculty gather to share resources and knowledge to build, prototype, and create. By integrating tools ranging from 3D printers and robotics to traditional woodworking and electronics, libraries are fostering a culture of "**Learning-by-Doing.**" This shift aligns perfectly with the modern educational philosophy that true mastery of a subject comes through practical application rather than passive observation.

Core Components of a Modern Library Makerspace

To be truly innovative, a library-based Makerspace integrates three vital pillars:

- **High-Tech Infrastructure:** This includes 3D printers, laser cutters, Arduino/Raspberry Pi kits for IoT, and high-end workstations for AI and data modelling.
- **Soft-Skill Development:** It serves as an incubator for "soft" innovation—encouraging design thinking, problem-solving, and cross-disciplinary collaboration.
- **Information Literacy:** Librarians act as "Innovation Curators," helping makers find the right patents, research papers, and technical manuals needed to fuel their inventions.

Bridging the Digital Divide : In an academic setting, particularly in specialized fields like Agriculture and Technology, a Makerspace democratizes access to expensive technology. A student with a revolutionary idea for an automated soil-moisture sensor might not have the funds for a private workshop; the Library Makerspace provides the tools, the Wi-Fi connectivity, and the expert guidance to turn that idea into a functional prototype. It bridges the gap between theoretical classroom learning and real-world industrial requirements.



The Librarian as a Facilitator of Innovation : The role of the information professional is also shifting. Today's librarians are no longer just "gatekeepers" of books; they are **Technology Navigators**. In a Makerspace, the librarian facilitates workshops, manages digital assets, and connects students with the global "Maker Movement" via platforms like GitHub. This enhances the institution's **Technology Enabled Learning Resources**, ensuring that the library remains the heart of the campus.

Conclusion : As we look toward the future, the integration of Makerspaces in libraries is not just a trend; it is a necessity for institutional excellence. By "leaving no stone unturned" in providing the best learning environment, our libraries are becoming vibrant hubs of innovation. The Makerspace represents the ultimate synthesis of traditional information services and cutting-edge technology, ensuring that our students are not just degree-holders, but creators and innovators ready for the challenges of tomorrow.

Dr. Shashi Rai
(Assistant Librarian)

राष्ट्रीय सेवा योजना



परिचय एवं इतिहास : राष्ट्रीय सेवा योजना भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा प्रारम्भ की गई एक महत्वपूर्ण योजना है। इसकी स्थापना वर्ष 1969 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर की गई थी। कृषि महाविद्यालय, उम्मेदगंज, कोटा में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई वर्ष 2018 से सक्रिय रूप से संचालित हो रही है। तब से यह इकाई निरंतर विद्यार्थियों को समाज सेवा, ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

उद्देश्य

- विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सेवा भावना विकसित करना।
- ग्रामीण एवं शहरी समुदाय की समस्याओं की समझ विकसित करना।
- नेतृत्व क्षमता, अनुशासन एवं टीम वर्क का विकास करना।
- पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाना।
- विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना।

प्रमुख गतिविधियां: कृषि महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा समय-समय पर विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाती हैं

- स्वच्छता अभियान एवं प्लास्टिक मुक्त अभियान
- वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम
- जागरूकता रैलीयां एवं जन जागरण अभियान
- स्वास्थ्य एवं रक्तदान शिविर
- पोस्टर, भाषण एवं निबंध प्रतियोगिताएं
- कृषि विस्तार कार्यक्रम एवं किसान जागरूकता

सात दिवसीय विशेष शिविर : राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य आकर्षण सात दिवसीय विशेष शिविर होता है, जिसमें स्वयंसेवक गोद लिए गए गांवों में रहकर कार्य करते हैं।

इस दौरान छात्र-छात्राएं

- स्वच्छता एवं स्वास्थ्य जागरूकता फैलाते हैं।
- वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण गतिविधियां करते हैं।
- ग्रामीणों को शिक्षा एवं सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक करते हैं।
- कृषि से संबंधित नवीन तकनीकों की जानकारी प्रदान करते हैं।

यह शिविर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक अनुभव को समृद्ध बनाता है।

महत्व : राष्ट्रीय सेवा योजना केवल एक योजना नहीं, बल्कि यह विद्यार्थियों के जीवन में संस्कार, अनुशासन एवं सेवा भावना विकसित करने का माध्यम है। यह विद्यार्थियों को

- जिम्मेदार नागरिक बनने
- समाज के प्रति संवेदनशील होने
- तथा राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा विशेष संदेश : “युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की सबसे अमूल्य धरोहर होती है।” राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल समाज सेवा तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना भी है। हमारा लक्ष्य है कि प्रत्येक स्वयं सेवक समाज की समस्याओं को समझे, उनके समाधान हेतु सक्रिय भूमिका निभाए तथा राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे।

राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विद्यार्थी “सेवा परमो धर्म:” की भावना को आत्मसात करते हुए एक जागरूक, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बने, यही हमारी सच्ची सफलता है।

डॉ. लोकेश कुमार मीणा
कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई

Milestone of College of Agriculture, Kota

In academic year-2024-25, 13 students of the college successfully qualified the ASRB-NET. Additionally, 03 students appeared in the ARS Mains Examination across various disciplines, conducted by the Agricultural Scientists Recruitment Board under the Indian Council of Agricultural Research, New Delhi as below.

S. No.	Name of student	Qualified Exam	Department
1	Murari Lal Meena	ICAR, NET and ARS	Agronomy
2	Raghuveer Dehran	ICAR, NET	Soil Science & Agri. Chemistry
3	Monika Yadav	ICAR, NET	Plant Pathology
4	Bineeta Yadav	NET and ARS	Soil Science & Agri. Chemistry
5	Laxmi Meena	ICAR ICAR, NET	Extension Education
6	Nikita Choudhary	ICAR NET and ARS	Plant Pathology
7	Dinesh Rathor	ICAR, NET	Agronomy
8	Rajesh Khokhar	ICAR, NET	Soil Science & Agri. Chemistry
9	Pooja Danotia	ICAR, NET	Extension Education

A total of 30 students from the 2024–25 batch secured admission to M.Sc. and Ph.D. programmes through ICAR-PG Entrance Examination, CUET, and Pre-PG examinations in reputed universities across India. The students achieved commendable ranks and gained admission to premier institutions such as Indian Agricultural Research Institute, Banaras Hindu University, Tamil Nadu Agricultural University, Maharana Pratap University of Agriculture and Technology, and Agriculture University Kota.

S. No.	Name of Student	Degree	Department	Entrance Exam	Admitted University	Rajasthan
1	Yuvraj Meena	M.Sc.	Water Science Technology	ICAR PG	IARI, New Delhi	New Delhi
2	Samarth Dhamani	M.Sc.	Plant Pathology	ICAR PG	BHU, Varanasi	Uttar Pradesh
3	Jitendra Dhakad	M.Sc.	Agronomy	ICAR PG/CUET	BHU, Varanasi	Uttar Pradesh
4	Govind Meena	M.Sc.	Soil Science	CUET	BHU, Varanasi	Uttar Pradesh
5	Sachin Mehra	M.Sc.	Soil Science	ICAR PG/CUET/Pre PG	JNKVV, Jabalpur	Madhya Pradesh
6	Ayush Gupta	M.Sc.	Plant Pathology	ICAR PG	NAU, Navsari	Gujrat
7	Gyanesh Gocher	M.Sc.	Plant Pathology	ICAR PG	IGKV Raipur	Chhattisgarh
8	Deshraj Meena	M.Sc.	Soil Science	ICAR PG/CUET	PAU, Ludhiana	Punjab
9	Vijay Dangi	M.Sc.	Soil Science	ICAR PG	TNAU	Tamil Nadu
10	Sarita Choudhary	M.Sc.	Vegetable	ICAR PG/Pre PG	CSA, Kanpur	Uttar Pradesh

11	Sushama Choudhary	M.Sc.	Plant Pathology	Pre PG	RARi, Jaipur	Rajasthan
12	Monti Nagar	M.Sc.	Agronomy	Pre PG	AU, Kota	Rajasthan
13	Nisha kumari Nagar	M.Sc.	Agronomy	Pre PG	AU, Kota	Rajasthan
14	Saurav Pareeek	M.Sc.	Entomology	CUET	Nagaland University	Nagaland
15	Sanjay Singh Poshwal	M.Sc.	Plant Pathology	Pre PG	RARI, Jaipur	Rajasthan
16	Ishu Choudhary	M.Sc.	PBG	Pre PG	RARi, Jaipur	Rajasthan
17	Jitendra Nagar	M.Sc.	Soil Science	ICAR PG/Pre PG	AU, Kota	Rajasthan
18	Neeraj Kushwaha	M.Sc.	PBG	ICAR PG/CUET/Pre PG	AU, Kota	UP, Gujrat, Rajasthan
19	Seema Gurjar	M.Sc.	Livestock	Pre PG	MPUAT	Rajasthan
20	Chintu Pankaj	M.Sc.	Plant Pathology	ICAR PG/Pre PG	AU, Kota	Rajasthan
21	Ankush Meena	M.Sc.	Soil Science	ICAR PG	SKUAST-Jammu	Jammu-Kashmir
22	Simran Chalka	M.Sc.	GBP	ICAR PG/Pre PG	MPUAT, Udaipur	Rajasthan
23	Ajay Sen	M.Sc.	Entomology	ICAR PG	Bikaner	Rajasthan
24	Aankasha Yadav	M.Sc.	Microbiology	ICAR PG/CUET	GBPUA&T	Uttarakhand
25	Kshitij Nagar	M.Sc.	Agronomy	Pre PG	-	Rajasthan
26	Manoj Meena	Ph.D.	GBP	ICAR PG/Pre Ph.D.	AU, Kota	Rajasthan
27	Avdhesh Meena	Ph.D.	GBP	Pre Ph.D.	Junagarh Agri. University.	Gujrat
28	Monika Yadav	Ph.D.	Path	Pre Ph.D.	RARi, Jaipur	Rajasthan
29	Komal Meena	Ph.D.	GBP	Pre Ph.D.	NAU, Navsari	Gujrat
30	Hemant Gurjar	Ph.D.	Extension	Pre Ph.D.	MPUAT, Udaipur	Rajasthan

Our Staff Members

S.No.	Name	Designation	Mobile No.	Photo
1.	Dr. S. K. Jain	Dean	9414782564	
2.	Dr. Kamal Chand Meena	Professor (Extension Education)	9602956432	
3.	Dr. Ram Raj Meena	Professor (Horticulture)	7891457212	
4.	Dr. Suneeta Pandey	Professor (GPB)	8305879759	
5.	Dr. Ramkishan Meena	Assoc. Prof. (Agronomy)	9460354603	
6.	Dr. Jugal Kishor Bana	Assoc. Prof. (Entomology)	9601091425	

S.No.	Name	Designation	Mobile No.	Photo
7.	Dr. Dama Ram	Assoc. Prof. (Plant Pathology)	9480766076	
8.	Dr. Manish Sharma	Assoc. Prof. (GPB)	8770336262	
9.	Dr. Hemraj Chhipa	Asstt. Prof. (Microbiology)	9540024455	
10.	Dr. Lokesh Kumar Meena	Asstt. Prof. (Agricultural Economics)	8789540809	
11.	Dr. Rakesh Kumar Yadav	Asstt. Prof. (Horticulture)	9928854064	
12.	Dr. Vinod Kumar Yadav	Asstt. Prof. (Soil Science & Agri. Chemistry)	7891232766	
13.	Dr. Arvind Nagar	Asstt. Prof. (Horticulture)	8700870572	

S.No.	Name	Designation	Mobile No.	Photo
14.	Dr. Roop Singh	Asstt. Prof. (Plant Pathology)	9571889881	
15.	Dr. Piyush Choudhary	Asstt. Prof. (Agronomy)	9461922313	
16.	Dr. Bharat Raj Meena	Asstt. Prof. (Agronomy)	9636038360	
17.	Dr. Nitu Mehta	Asstt. Prof. (Agricultural Statistics)	9462434486	
18.	Dr. Preeti Bassar	Asstt. Prof. (GPB)	8329713920	
19.	Dr. Kishore Pujar	Asstt. Prof. (Entomology)	720454223	
20.	Dr. Shashi Rai	Asstt. Lib. (Library Science)	7005648596	

S.No.	Name	Designation	Mobile No.	Photo
21.	Dr. Praveen Kumar Chachaiya	Lab. Tech.	9460676943	
22.	Sh. Mukesh Pankaj	Lab. Asstt.	7023021040	
23.	Smt. Bharti Tiwari	Lab. Asstt.	8094864427	
24.	Miss Vaishali Nagar	Lab. Asstt.	7611076629	
25.	Sh. Kalim Mohammad	Agri. Sup.	9929322029	
26.	Sh. Rasid Ali	Lib. Asstt.	9001599852	
27.	Mrs. Tanushree	LDC	7424888328	

S.No.	Name	Designation	Mobile No.	Photo
28.	Sh. Niranjan Dave	LDC	9166598347	
29.	Sh. Mahendr Kumar Jat	LDC	9622989521	
30.	Smt. Seema Cheeta	Matron	9571389116	
31.	Sh. Ramswroop	Peon	7627015463	
32.	Sh. Raghunath Ram	Driver	9680748014	



महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियां



महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियां





News Gallery

कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में लगाए 200 पौधे

नवरत्न/कोटा। कोटा कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में छात्रों को हरियाली प्रारम्भ करने के लक्ष्य में विद्यार्थियों को 200 पौधे लगाए गए।



कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में छात्रों को हरियाली प्रारम्भ करने के लक्ष्य में विद्यार्थियों को 200 पौधे लगाए गए।

कृषि विश्वविद्यालय में नए शैक्षणिक कार्यक्रम आरम्भ करने पर बनी सहमति



हेडलाइन न्यूज | कोटा

कृषि विश्वविद्यालय में नए शैक्षणिक कार्यक्रम आरम्भ करने पर बनी सहमति।

हमारा जंगल, हमारा बाघ, हमारी जिम्मेदारी-जन जागरूकता कार्यक्रम

कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज कोटा में पर्यावरण, वन, जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं राजस्थान सरकार के द्वारा आयोजित अलावर टाइगर मेरथान 2026 के उपलक्ष्य में हमारा जंगल, हमारा बाघ, हमारी जिम्मेदारी-जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 28 जनवरी को किया गया।



कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज कोटा में पर्यावरण, वन, जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं राजस्थान सरकार के द्वारा आयोजित अलावर टाइगर मेरथान 2026 के उपलक्ष्य में हमारा जंगल, हमारा बाघ, हमारी जिम्मेदारी-जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 28 जनवरी को किया गया।

कृषि कॉलेज में नए स्टूडेंट्स का इंटरन प्रोग्राम शुरू



कोटा। कृषि कॉलेज, उम्मेदगंज में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों का दो सप्ताह का टैकनॉलॉजी (इंटरन) प्रोग्राम शुरू हुआ।

कृषि महाविद्यालय, उम्मेदगंज-ज्योतिबा फुले जयंती आयोजित

हेडलाइन न्यूज | कोटा



कृषि महाविद्यालय, उम्मेदगंज-कोटा में स्वदेशी संकल्प दौड़ का आयोजन।

कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज-कोटा में स्वदेशी संकल्प दौड़ का आयोजन



कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में स्वदेशी संकल्प दौड़ का आयोजन।

कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में नशा मुक्ति की दिलाई शपथ



कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में नशा मुक्ति की दिलाई शपथ।

कृषि कॉलेज के 30 स्टूडेंट्स का राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में चयन

कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज के विद्यार्थियों ने उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

कृषि महाविद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम



कोटा। कृषि महाविद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम।

कृषि महाविद्यालय में नए स्टूडेंट्स का इंटरन प्रोग्राम शुरू



कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में नए स्टूडेंट्स का इंटरन प्रोग्राम शुरू।

कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज कोटा में मतदाता दिवस का आयोजन

कलम का अधिकार



कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज कोटा में मतदाता दिवस का आयोजन।

कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में सुशासन दिवस का आयोजन



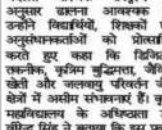
कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में सुशासन दिवस का आयोजन।

कृषि महाविद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम



कोटा। कृषि महाविद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम।

कृषि महाविद्यालय में नए स्टूडेंट्स का इंटरन प्रोग्राम शुरू



कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में नए स्टूडेंट्स का इंटरन प्रोग्राम शुरू।

आईसीएआर के निदेशक ने स्टूडेंट्स से किया संवाद

कोटा। उम्मेदगंज स्थित कृषि महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए विशेष व्याख्यान व संवाद कार्यक्रम हुआ।

कृषि विश्वविद्यालय उम्मेदगंज में मानसिक स्वास्थ्य पर जागरूकता कार्यक्रम हुआ

कोटा। कृषि विश्वविद्यालय उम्मेदगंज में मानसिक स्वास्थ्य पर जागरूकता कार्यक्रम हुआ।

कृषि महाविद्यालय में नए स्टूडेंट्स का इंटरन प्रोग्राम शुरू

कोटा। कृषि महाविद्यालय उम्मेदगंज में नए स्टूडेंट्स का इंटरन प्रोग्राम शुरू।

